



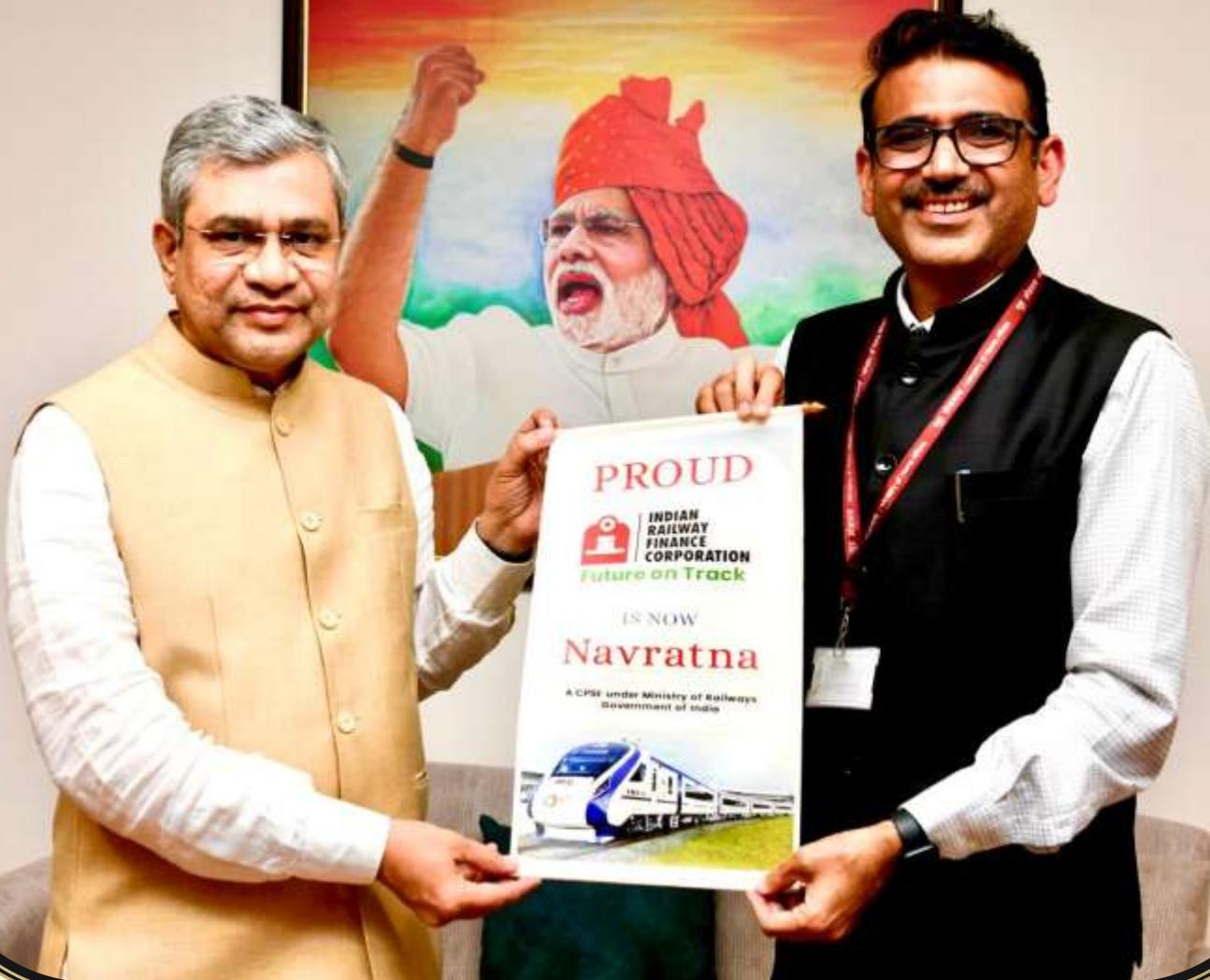
इंडियन
रेलवे
फाइनेंस
कॉर्पोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरन उष्कम)

भविष्य पथ पर

उड़ान

(सातवां अंक)

आई.आर.एफ.सी. की हिंदी की छमाही ई-पत्रिका



इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड

यूजी फ्लोर, ईस्ट टावर, एनबीसीसी प्लेस, भीष्म पितामह
मार्ग, प्रगति विहार, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003



इंडियन
रेलवे
फाइनेंस
कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)

भविष्य पथ पर

उड़ान

(सातवां अंक)

आई.आर.एफ.सी. की हिंदी की छमाही ई-पत्रिका

अनुक्रमणिका

अंक – 7 सातवां (अक्टूबर, 2024 से मार्च, 2025 छमाही)

वर्ष 2025

01. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से
02. संदेश
03. आईआरएफसी के निदेशक मंडल का परिचय (31.03.2025 तक की स्थिति के अनुसार)
04. वर्ष 2024-25 में आईआरएफसी में हिन्दी के प्रयोग-प्रसार के लिए किए गए विशेष प्रयास तथा सांस्कृतिक गतिविधियां
05. आईआरएफसी की व्यावसायिक उपलब्धियां
06. बड़े क्रहों संबंधी सूचना का केंद्रीय संग्रह (सीआरआईएलसी): एक व्यापक अवलोकन - लेख
07. भारत सरकार के मिनीरेल, नवरत्न तथा महारत्न केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम (सीपीएसई) - लेख
08. दर्द के पार – Beyond the Pain - लेख
09. जोखिम उठाना वैकल्पिक नहीं है - लेख
10. पान: स्वाद, परंपरा और संस्कृति का संगम - लेख
11. काशी विश्वनाथ मंदिर का महल्ला - लेख
12. आईआरएफसी में आयोजित विशाल स्वच्छता अभियान 'श्रमदान' की जलकियाँ (दिनांक: 02.10.2024)
13. आईआरएफसी में आयोजित सतर्कता जागरूकता अभियान, 2024 की जलकियाँ (दिनांक: 09.10.2024)
14. आईआरएफसी में आयोजित 38वें स्थापना दिवस की जलकियाँ (दिनांक: 12.12.2024)
15. आईआरएफसी में आयोजित हिंदी कार्यशाला (दिनांक: 18.12.2024)
16. आईआरएफसी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक (दिनांक: 24.12.2024)
17. जयपुर, राजस्थान में आयोजित मध्य पश्चिम एवं उत्तरी क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन (दिनांक: 17.02.2025)
18. आईआरएफसी को 03 मार्च, 2025 को नवरत्न कंपनी का दर्जा प्राप्त होने पर गौरव से परिपूर्ण क्षणों की जलकियाँ
19. संबंधों में हानि लाभ नहीं देखा जाता - कहानी
20. बालकवि वैरागी (10 फरवरी, 1931 – 13 मई, 2018) - जयंती
21. युवा पीढ़ी द्वारा लिया जा रहा तनाव: इसे कैसे समझें और नियंत्रित करें - लेख
22. मनाली – प्रकृति की गोद में बसा स्वर्ग – यात्रा वृतांत
23. आईआरएफसी में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन (दिनांक: 08.03.2025)
24. आईआरएफसी द्वारा इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित होली समारोह की जलकियाँ (दिनांक: 13.03.2025)
25. आईआरएफसी में आयोजित हिंदी कार्यशाला (दिनांक: 26.03.2025)
26. आईआरएफसी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक (दिनांक: 26.03.2025)
27. वर्ष 2024-25 के लिए कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) पहल के तहत पिंक टॉयलेट परियोजना की जलकियाँ
28. आईआरएफसी की सीएसआर पहल के तहत आईआरएफसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार द्वारा की उपस्थिति में नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री वी.वी.आर. सुब्रमण्यन द्वारा सार्वजनिक नीति प्रयोगशाला के उद्घाटन की जलकियाँ
29. आईआरएफसी द्वारा अध्यक्ष ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए एनटीपीसी रिन्यूएवल एनर्जी लिमिटेड के साथ किए गए 5000 करोड़ रुपये के समझौते की जलकियाँ
30. आईआरएफसी के इतिहास में अविस्मरणीय उपलब्धि- खेल उत्सव (Sports Carnival)-2025
31. राजभाषा विभाग, रेल मंत्रालय द्वारा आईआरएफसी कार्यालय का निरीक्षण (दिनांक: 31.03.2025)
32. महाकृष्ण - लेख
33. अस्तित्व – कविता
34. भारत का दर्शन – लेख
35. गति का जीवन आसान नहीं होता - लेख

मुख्य संरक्षक

श्री मनोज कुमार द्वारा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

प्रधान संपादक

मनीष चंद्र
कार्यपालक निदेशक
(मा. सं. एवं प्रशा.)

संपादक

अजय कक्षा
सहायक प्रबंधक (प्रशासन)

उप संपादक

पुष्पिंदर कौर
हिंदी परामर्शदाता

सहायक

रोहन श्रीवास्तव
हिंदी अनुवादक

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से



प्रिय आईआरएफसी परिवार,
आपके समक्ष प्रस्तुत है आईआरएफसी की ई-पत्रिका 'उड़ान' का सातवाँ अंक। मुझे न केवल आशा है, वरन् पूर्ण विश्वास है कि यह अंक भी पूर्ववर्ती अंकों की तरह आपके लिए प्रेरणादायी, बौद्धिक रूप से समृद्ध, एवं आनंदप्रद सिद्ध होगा।
इस अंक में हमने न केवल कंपनी की व्यावसायिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को समाहित किया है, अपितु राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं संवर्धन हेतु किए गए उल्लेखनीय प्रयासों को भी संजोया है।

मुझे यह बताते हुए हर्ष और गर्व की अनुभूति हो रही है कि आईआरएफसी को भारत सरकार द्वारा "मिनीरक्ष" से "नवरक्ष" श्रेणी में उत्क्रमित किया गया है। यह सम्मान हमारी संस्था की कार्यकुशलता, उत्तरदायित्वबोध एवं अटूट समर्पण का मूर्त रूप है।

आज हम अपने इतिहास का सर्वाधिक राजस्व अर्जित कर रहे हैं, बाज़ार से अब तक की सर्वश्रेष्ठ स्वीकृति प्राप्त कर रहे हैं और व्यावसायिक सफलता के स्वर्णिम शिखर के सन्निकट हैं; परंतु इन सबसे भी ऊपर यदि कोई उपलब्धि है — तो वह है हमारा अपने कर्म के प्रति समर्पण, अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठा और अपनी प्रेरणा के प्रति विश्वास।

Henry Ford ने कहा था: "If everyone is moving forward together, then success takes care of itself."

यह सफलता हमारी नहीं, हम सबकी है। यह उस अद्भुत समर्पण की कहानी है, जो हमारे मानव संसाधन की सबसे बड़ी पूँजी बनकर उभरी है।

मेरे अनुभव में, साहित्य के प्रति अनुराग — चाहे वह हिंदी हो या कोई अन्य भाषा — एक प्रकार से पूर्णता के प्रति अनुराग है। जब हम अपने लिखे हुए को कुछ समय पश्चात पढ़ते हैं, तो वही शब्द हमें असंपूर्ण प्रतीत होते हैं। हम उन्हें सुधारना चाहते हैं, और इस प्रकार सतत सुधार की प्रक्रिया आरंभ होती है। यही साहित्य की साधना है — परिष्कार की ओर एक अविराम यात्रा।

अतः, मैं अपने प्रिय आईआरएफसी परिवार से आग्रह करता हूँ कि हम एक ऐसा शब्द-समर्पित समूह गठित करें, जहाँ वाक्य एक-दूसरे से सार्थक रूप में संयुक्त हों, भाषा में सामूहिकता की चमक हो, और विराम-चिन्ह मन को विश्रांति दें।

मैं 'उड़ान' के संपादकीय मंडल एवं प्रकाशन में संलग्न सभी कर्मठ सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा पत्रिका की निरंतर साहित्यिक समृद्धि और प्रकाशमान भविष्य की मंगलकामना करता हूँ।

मनोज दूबे
मनोज कुमार दूबे
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश



आईआरएफसी की ई-पत्रिका "उडान" का सातवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

पत्र-पत्रिकाएं किसी भी संगठन की व्यावसायिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का आईना होती हैं। हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए पत्रिकाओं का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण दायित्व है जिसे अपने व्यावसायिक दायित्वों के साथ-साथ आईआरएफसी बखूबी निभा रहा है।

इस अंक में आईआरएफसी के अधिकारियों / कर्मचारियों की स्व-लिखित मौलिक रचनाओं यथा कविता, लेख, कहानी, यात्रा- संस्मरण आदि को समाविष्ट किया गया है। यह पत्रिका न केवल हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की हिंदी के प्रति रुचि विकसित करने में सहयोग देती है बल्कि उनकी रचनात्मक क्षमता को बढ़ाने के लिए एक मंच भी प्रदान करती है। इस अंक में कंपनी की व्यावसायिक उपलब्धियों तथा अन्य ज्ञानवर्धक, समसामयिक एवं वैविध्यपूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाई गई है। छमाही के दौरान कार्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां भी दी गई हैं।

आईआरएफसी को उत्कृष्ट व्यावसायिक उपलब्धियों के कारण भारत सरकार द्वारा "मिनीरत्न" श्रेणी से "नवरत्न" की श्रेणी में अपग्रेड किया गया है जो हम सबके लिए अत्यंत गौरव की बात है। यह हमारे संगठन के कुशल नेतृत्व तथा संगठित समर्पित कर्मीदल के अथक प्रयासों का सुखद परिणाम है।

आशा है कि यह अंक भी आप सबको बहुत रुचिकर और उपयोगी लगेगा। "उडान" पत्रिका को और भी बेहतर और उपयोगी बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

मनीष चंद्र

कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन)

आईआरएफसी के निदेशक मंडल का परिचय

(31.03.2025 तक की स्थिति के अनुसार)



श्री मनोज कुमार दूबे
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



सुश्री शैली वर्मा
निदेशक (वित्त)



श्री बलदेव पुरुषार्थ
सरकार द्वारा नामित
निदेशक



श्री अभिषेक कुमार
सरकार द्वारा
नामित निदेशक

आईआरएफसी के निदेशक मंडल का परिचय

(31.03.2025 तक की स्थिति के अनुसार)

श्री मनोज कुमार दूबे, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदू कॉलेज से स्नातक और परास्नातक किया है। उन्होंने इंडियन स्कूल ऑफ माइंस, धनबाद से एमबीए किया है और बैच 2011-13 के लिए बैच में शीर्ष स्थान प्राप्त करने के लिए तत्कालीन राष्ट्रपति से उन्हें रजत पदक से सम्मानित किया गया था।

अपने पहले ही प्रयास में सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण करने और 1993 बैच में भारतीय रेलवे लेखा सेवा (आईआरएएस) में शामिल होने से पहले, उन्होंने यूटीआई के साथ वित्तीय क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की, जहाँ उन्होंने ग्रामीण जनता को विभिन्न लाभदायक म्यूचुअल फंड योजनाओं में एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो उनके दृष्टिकोण और समावेशी वित्तीय विकास के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

भारतीय रेलवे के साथ अपने अनुकरणीय करियर के दौरान, उन्होंने बैंकों के माध्यम से वेतन के लगभग सार्वभौमिक भुगतान, ई-टेंडरिंग और ई-नीलामी प्रणाली की शुरूआत और बिल प्रसंस्करण, पेंशन निपटान और भविष्य निधि प्रबंधन के डिजिटलीकरण जैसी प्रमुख पहलों को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके दूरदर्शी नेतृत्व और अभिनव दृष्टिकोण ने उन्हें 2011 में रेल मंत्री स्तर पर उत्कृष्ट सेवा के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार दिलाया।

उनकी विशेषज्ञता केवल वित्त तक ही सीमित नहीं है। उन्होंने रेलवे बोर्ड के सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) निदेशालय और वित्त वाणिज्यिक निदेशालय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रेलवे बोर्ड, रेल मंत्रालय के पीपीपी निदेशालय में हाई-स्पीड रेल और डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर परियोजनाओं में उनका अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा।

वे यूएसए और आईआर की जनरल इलेक्ट्रिकल्स, फ्रांस और आईआर की एल्सटॉम और एनएमडीसी, सेल और भारतीय रेलवे की एक संयुक्त उद्यम कंपनी के निदेशक मंडल में थे। उन्होंने 31.10.2018 से कॉन्कार के निदेशक (वित्त) और सीएफओ का पदभार संभाला। कॉन्कार के निदेशक (वित्त) और सीएफओ के रूप में, वे कॉर्पोरेट पुनर्गठन और बड़े पूंजीगत व्यय प्रस्तावों के निष्पादन के लिए उत्प्रेरक रहे हैं। उनके नेतृत्व में, कंपनी ने भारतीय रेलवे के साथ पट्टे पर दी गई भूमि, टैरिफ संरचना आदि से संबंधित कई महत्वपूर्ण मुद्दों को सुलझाया; और शेयरधारकों का विश्वास बढ़ा, जिसका प्रमाण शेयरधारकों की संख्या में लगभग 55,000 से लगभग 300,000 तक की तीव्र वृद्धि हुई।

उन्होंने इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईआरएफसी) में 10 अक्टूबर, 2024 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का कार्यभार संभाला है।

आईआरएफसी के निदेशक मंडल का परिचय

(31.03.2025 तक की स्थिति के अनुसार)

1. सुश्री शैली वर्मा, आईआरएफसी की निदेशक (वित्त) हैं। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री राम कॉलेज ऑफ कॉर्मर्स से वाणिज्य में स्नातक की डिग्री प्राप्त की है, और वे भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान की फेलो सदस्य भी हैं।

उन्हें विद्युत क्षेत्र के वित्तपोषण में 30 वर्षों से अधिक का अनुभव है। हमारी कंपनी के बोर्ड में नियुक्ति से पहले, उन्होंने विभिन्न पदों पर कार्य किया, जिनमें हाल ही में पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड में कार्यकारी निदेशक (वित्त) का पद शामिल है।

2. श्री बलदेव पुरुषार्थ को 03 जून, 2020 को आईआरएफसी बोर्ड में सरकार द्वारा नामित निदेशक के रूप में शामिल किए गए। वह 2002 में भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) में शामिल हुए। संयुक्त सचिव, आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के रूप में कार्यभार ग्रहण करने से पूर्व, उन्होंने सचिव, लोकपाल और संभागीय आयुक्त जलंधर, पंजाब के रूप में कार्य किया। उन्होंने पंजाब सरकार और भारत सरकार में विभिन्न क्षेत्रों और सचिवालय पदों पर भी काम किया। इन पदों में आवास और शहरी कार्य मंत्रालय में केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), निदेशक, उद्योग और वाणिज्य विभाग, पंजाब, निदेशक, तकनीकी शिक्षा और औद्योगिक प्रशिक्षण, पंजाब, आयुक्त, एनआरआई, पंजाब और विशेष सचिव, व्यय, पंजाब के पद शामिल हैं।

वह भारतीय रेल स्टेशन विकास निगम लिमिटेड, राष्ट्रीय निवेश और इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड ट्रस्टी लिमिटेड और राष्ट्रीय भूमि मुद्रीकरण निगम लिमिटेड के बोर्ड में भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करते हैं। श्री बलदेव पुरुषार्थ ने दिल्ली विश्वविद्यालय से इतिहास में स्नातकोत्तर की डिग्री की है।

3. श्री अभिषेक कुमार 2001 बैच के भारतीय रेल लेखा सेवा (आईआरएएस) के अधिकारी हैं, जो रेलवे बोर्ड में कार्यपालक निदेशक वित्त (बजट) के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेज, कालीकट (अब एनआईटी कालीकट) से सिविल इंजीनियरिंग में बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी की डिग्री प्राप्त की है।

उन्होंने आईएमटी गाजियाबाद (सीडीएल) से वित्त में पीजीडीएम (कार्यकारी) की डिग्री भी प्राप्त की है। रेलवे के लिए व्यय और आय प्रस्तावों, सरकारी लेखांकन, बजट, आंतरिक जांच आदि के संबंध में वित्त सलाहकार के रूप में रेलवे में उनके पास 20 से अधिक वर्षों का अनुभव है।

वह भारतीय रेल की एक्रूअल बेस्ड एकाउंटिंग की अग्रणी परियोजना के साथ मुख्य परियोजना प्रबंधक के रूप में भी जुड़े हुए हैं।

रेलवे बोर्ड में कार्यपालक निदेशक (बजट) के रूप में अपने वर्तमान कार्यभार से पहले, वह रेलवे सूचना प्रणाली केंद्र (क्रिस) में महाप्रबंधक (वित्त) के रूप में प्रतिनियुक्ति पर थे और लेखांकन आईटी अनुप्रयोगों अर्थात् आईपीएएस और जीएसटी मॉड्यूल की भी देख रेख कर रहे थे।

वर्ष 2024-25 में आईआरएफसी में हिन्दी के प्रयोग-प्रसार के लिए किए गए विशेष प्रयास तथा सांस्कृतिक गतिविधियां

1. आईआरएफसी में गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) के निर्देशानुसार प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया जाता है।
2. आईआरएफसी के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करने और उन्हें हिंदी-अंग्रेजी शब्दों/वाक्यांशों की जानकारी देने के लिए हिंदी कार्यशालाओं का प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से आयोजन किया जाता है।
3. आईआरएफसी में गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) के निर्देशानुसार 17.09.2024 से 20.09.2024 तक हिंदी सप्ताह/पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न कार्यक्रम तथा प्रतियोगिताएं जैसे हिंदी सुलेख प्रतियोगिता, हिंदी चित्र वर्णन प्रतियोगिता, हिंदी स्लोगन प्रतियोगिता तथा हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई तथा प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
4. गृह मंत्रालय की व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत पिछले 3 वर्षों में 4 कर्मचारियों को इस योजना के तहत अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए 3000-3000 रु. के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
5. सितंबर 2021 से आईआरएफसी की हिंदी की छमाही ई-पत्रिका “उडान” का प्रकाशन शुरू किया गया जिसमें आईआरएफसी के कार्मिकों और उनके परिवारजनों की मौलिक रचनाओं, कंपनी की उपलब्धियों तथा अन्य उपयोगी जानकारी को समाहित किया गया है। अभी तक “उडान” पत्रिका के 6 अंकों का प्रकाशन किया जा चुका है। सातवां अंक भी तैयार है। अभी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में 7वें अंक का विमोचन किया जाना है।
6. गृह मंत्रालय और रेल मंत्रालय द्वारा अपेक्षित तिमाही/छमाही रिपोर्ट तैयार करके भिजवाना।
7. उच्चाधिकारियों द्वारा दिए जाने वाले हिंदी भाषण तैयार करना।
8. रेलवे संबंधी स्थायी समिति के अध्ययन दौरे के दौरान आईआरएफसी द्वारा उपलब्ध करवाए जाने वाले तात्कालिक दस्तावेजों का तुरंत द्विभाषीकरण करना।

9. आईआरएफसी की लगभग 300 पृष्ठ की वार्षिक रिपोर्ट का द्विभाषीकरण।
10. नराकास के अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कर्मचारियों को नामित करना।
11. आईआरएफसी के दैनिक उपयोग में आने वाले मानक नेमी पत्रों, फॉर्मों तथा करारों के हिंदी अनुवाद करवा कर टैम्प्लेट रूप में उपलब्ध करवाया गया है ताकि नेमी पत्र द्विभाषी रूप में जारी किए जा सकें। अभी तक 32 टैम्प्लेट द्विभाषी रूप में तैयार किए गए हैं।
12. भारत सरकार द्वारा आईआरएफसी को 3 मार्च 2025 को “मिनीरत्न” श्रेणी से “नवरत्न” श्रेणी में अपग्रेड किया गया है। निश्चय ही आईआरएफसी के लिए यह अत्यंत हर्ष और गौरव की बात है। यह हमारे संगठन के कुशल नेतृत्व और कर्मठ कर्मदिल के संगठित प्रयासों का सुखद परिणाम है।
13. आईआरएफसी में 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस भी बड़े शानदार तरीके से मनाया गया।
14. आईआरएफसी में 28 मार्च 2025 को करनैल सिंह स्टेडियम, नई दिल्ली में खेलकूद दिवस का भव्य आयोजन किया गया जिसमें आईआरएफसी के सभी अधिकारियों / कर्मचारियों ने अत्यंत उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे क्रिकेट मैच, दौड़ प्रतियोगिता, टेबल टेनिस प्रतियोगिता, कैरम प्रतियोगिता, शतरंज प्रतियोगिता तथा बैडमिंटन प्रतियोगिता आयोजित की गई तथा इन प्रतियोगितओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर आए प्रतिभागियों को गोल्ड, सिल्वर और ब्रांज मैडल से समानित किया गया। यह खेलकूद दिवस आईआरएफसी के इतिहास में वेहद रोचक एवं उत्साहवर्धक कार्यक्रम सिद्ध हुआ। जिसमें सभी कार्मिक अत्यंत गौरान्वित महसूस कर रहे थे।
15. आईआरएफसी को नराकास द्वारा वर्ष 2021-22 के लिए शील्ड सम्मान पुरस्कार और 2022-23 के लिए संयुक्त हिंदी सम्मेलन के आयोजन तथा गृह-पत्रिका “उड़ान” के प्रकाशन के लिए “शील्ड पुरस्कार सम्मान” से सम्मानित किया गया है। इस प्रकार आईआरएफसी को नराकास से लगातार 2 वर्षों से शील्ड पुरस्कार सम्मान से सम्मानित किया जा रहा है।

आईआरएफसी की व्यावसायिक उपलब्धियां

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड ("आईआरएफसी" या "कंपनी"), रेल मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत 'नवरत्न' अनुसूची-ए सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम है।

आईआरएफसी जो आरबीआई के साथ गैर-जमा लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्त कंपनी (एनबीएफसी) और इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंसिंग कंपनी (आईएफसी) के रूप में पंजीकृत है ने आज **31 मार्च 2025** को समाप्त चौथी तिमाही और वित्त वर्ष के लिए अपने लेखापरीक्षित वित्तीय परिणामों (स्टैंडअलोन) की रिपोर्ट की है।

31 मार्च 2025 को समाप्त अवधि के दौरान, कंपनी ने **6502.00** करोड़ रुपये का कर-पश्चात लाभ दर्ज किया, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में यह **6412.11** करोड़ रुपये दर्ज किया गया था। यह आईआरएफसी के इतिहास में किसी वित्तीय वर्ष के लिए दर्ज किया गया अब तक का सबसे अधिक कर-पश्चात लाभ है।

31 मार्च 2025 को समाप्त वित्त वर्ष के लिए कुल आय में **1.88%** की वृद्धि हुई और यह पिछले वर्ष की इसी अवधि में दर्ज **26655.92** करोड़ रुपये की तुलना में **27156.41** करोड़ रुपये हो गई। यह भी आईआरएफसी के इतिहास में किसी भी वित्तीय वर्ष के लिए अब तक का सबसे अधिक राजस्व है।

कुल आय में **3.79%** की वृद्धि हुई और यह वित्त वर्ष 2024-25 की चौथी तिमाही में **6723.80** करोड़ रुपये हो गई, जबकि वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में यह **6477.99** करोड़ रुपये थी।

31 मार्च 2025 तक नेटवर्थ में **7.09** प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह **52667.77** करोड़ रुपये हो गई, जबकि यह **31 मार्च 2024** तक **49178.57** करोड़ रुपये थी।

31 मार्च 2025 तक प्रबंधन के तहत परिसंपत्तियां (एयूएम) 460047.84 करोड़ रुपये हैं, और 31 मार्च 2025 को समाप्त अवधि के लिए कंपनी की प्रति शेयर आय 4.98 रुपये है।

आईआरएफसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार दुबे ने कहा कि: आईआरएफसी रणनीतिक रूप से अपने ऋण पोर्टफोलियो में विविधता ला रहा है, रेलवे को केंद्र में रखते हुए स्वयं को बुनियादी ढांचे और लॉजिस्टिक्स इकोसिस्टम में एक प्रमुख ऋणदाता के रूप में स्थापित कर रहा है। आईआरएफसी ने रेलवे संपर्क वाली परियोजनाओं को वित्तपोषित करते हुए रेल मंत्रालय से परे वित्तपोषण का विस्तार किया। कैलेंडर वर्ष 2025 के पहले चार महीनों में, आईआरएफसी ने 14,000 करोड़ रुपये का कारोबार किया। इसमें एनटीपीसी के बीओबीआर रेक के लिए ₹700 करोड़ का वित्तीय पट्टा, एनटीपीसी रिन्यूएबल एनर्जी लिमिटेड को ₹5,000 करोड़ का सावधि ऋण स्वीकृत करना और पीवीयूएनएल के बनहरडीह कोल ब्लॉक के लिए ₹3,167 करोड़ के ऋण के लिए एल1 बोलीदाता के रूप में उभरना शामिल है।

आईआरएफसी ने एनटीपीसी के पूंजीगत व्यय के लिए ₹5,000 करोड़ की ऋण बोली भी हासिल की और साथ ही नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए आरईएमसीएल और बुनियादी ढांचे के विकास, परिवहन को बढ़ाने और शहरी भीड़भाड़ को कम करने के लिए एमएमआरडीए के साथ ₹50,000 करोड़ के समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए।

“हम विभिन्न स्रोतों के माध्यम से वित्तपोषण के सस्ते स्रोत जुटाने की दिशा में सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं, जिसमें शून्य कूपन बांड, पूंजीगत लाभ कर छूट बांड (अर्थात् 54ईसी बांड) का अधिक अधिग्रहण, सस्ते घरेलू बांड बाजार का लाभ उठाना, ईसीबी का मिश्रण आदि शामिल हैं और इन संसाधनों को सर्वाधिक प्रतिस्पर्धी दरों पर नियोजित करके, हम अपने आपको राष्ट्रीय हित की दीर्घकालिक परियोजनाओं के लिए सबसे सस्ते ऋणदाता के रूप में स्थापित कर सकेंगे, जिसमें समग्र सरकारी दृष्टिकोण होगा।”

लेख

बड़े ऋणों संबंधी सूचना का केंद्रीय संग्रह (सीआरआईएलसी): एक व्यापक अवलोकन

परिचय

बैंकिंग क्षेत्र किसी भी अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो वित्तीय लेनदेन को सुगम बनाता है, ऋण प्रदान करता है और व्यवसायों और व्यक्तियों को सहायता प्रदान करता है। बैंकों के सामने आने वाली महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है ऋण जोखिम का प्रबंधन करना, विशेष रूप से बड़े उधारकर्ताओं के संबंध में। इससे निपटने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने 2014 में बड़े ऋणों संबंधी सूचना का केंद्रीय संग्रह (सीआरआईएलसी) स्थापित किया। इस पहल का उद्देश्य ऋण जोखिम प्रबंधन में सुधार करना और बैंकिंग प्रणाली में प्रणालीगत जोखिमों को रोकना है।

सीआरआईएलसी एक केंद्रीकृत डेटाबेस के रूप में कार्य करता है जो बड़े उधारकर्ताओं की क्रेडिट जानकारी रिकॉर्ड करता है। बैंक और वित्तीय संस्थान इस रिपॉजिटरी का उपयोग उधारकर्ता के व्यवहार को ट्रैक करने, खातों में दबाव की पहचान करने और जोखिमों को कम करने के लिए सक्रिय उपाय करने के लिए करते हैं। यह लेख सीआरआईएलसी, इसके उद्देश्य, कार्यप्रणाली, नियामक ढांचे, लाभों और चुनौतियों का गहन विश्लेषण प्रदान करता है।

सीआरआईएलसी को समझना

सीआरआईएलसी आरबीआई द्वारा स्थापित एक क्रेडिट सूचना प्रणाली है, जो बैंकों और वित्तीय संस्थानों द्वारा दिए जाने वाले बड़े ऋणों की निगरानी करती है। बड़े ऋणों का तात्पर्य 5 करोड़ रुपये और उससे अधिक के ऋण जोखिम से है। रिपॉजिटरी ऐसे ऋणों का विस्तृत रिकॉर्ड रखती है, जिसमें उनकी पुनर्भुगतान स्थिति, पुनर्गठन स्थिति और विशेष उल्लेख खातों (एसएमए) या गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (एनपीए) के रूप में वर्गीकरण शामिल है।

सीआरआईएलसी का प्राथमिक उद्देश्य बड़े उधारकर्ताओं में वित्तीय दबाव के बारे में बैंकों और विनियामकों को प्रारंभिक चेतावनी संकेत प्रदान करना है। बैंकों में क्रेडिट डेटा को समेकित करके, सीआरआईएलसी धोखाधड़ी को रोकने, खराब ऋणों को कम करने और वित्तीय प्रणाली की समग्र लाभप्रदता को बढ़ाने में मदद करता है।

सीआरआईएलसी के उद्देश्य

सीआरआईएलसी की शुरुआत कई प्रमुख उद्देश्यों के साथ की गई थी:

- वित्तीय दबाव का शीघ्र पता लगाना - यह रिपोजिटरी बैंकों और वित्तीय संस्थानों को वृहद ऋणों की निगरानी करने और दबाव का शीघ्र पता लगाने में सक्षम बनाती है।

2. सीआरआईएलसी बैंकों को जोखिमों का आकलन करने और ऋणों को एनपीए में बदलने से रोकने में मदद करता है।
3. बेहतर ऋण जोखिम प्रबंधन - यह प्रणाली बैंकों को उधारकर्ताओं के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान करती है, जिससे बेहतर ऋण जोखिम मूल्यांकन संभव हो पाता है।
4. नियामक चूक - सीआरआईएलसी आरबीआई को वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक होने पर निरीक्षण और हस्तक्षेप करने में सक्षम बनाता है।
5. एक से अधिक उधार लेने से रोकना - यह उधारकर्ता को एक से अधिक उधारदाताओं से अतिरिक्त ऋण लेने से रोकता है तथा प्रणालीगत जोखिम को कम करता है।

सीआरआईएलसी कैसे काम करता है।

सीआरआईएलसी एक डेटाबेस के रूप में कार्य करता है जो बैंकों, वित्तीय संस्थानों और विनियामकों के बीच क्रेडिट जानकारी एकत्रित और साझा करता है। सिस्टम इस प्रकार काम करता है:

1. डेटा संग्रहण

- बैंक और वित्तीय संस्थान 5 करोड़ रुपये और उससे अधिक के कुल ऋण वाले सभी उधारकर्ताओं का क्रेडिट डेटा सीआरआईएलसी को प्रस्तुत करते हैं।
- डेटा में उधारकर्ता का विवरण, ऋण की राशि, पुनर्भुगतान स्थिति और एसएमए (0, 1, या 2) या एनपीए के रूप में वर्गीकरण शामिल है।

2. रिपोर्टिंग तंत्र

- बैंकों को तिमाही आधार पर सीआरआईएलसी को ऋण संबंधी जानकारी प्रस्तुत करनी होगी।
- चूक या दबाव के संकेतों के मामले में, बैंकों को मासिक आधार पर विशेष उल्लेख खाता (एसएमए) वर्गीकरण की रिपोर्ट करना आवश्यक है।

3. एसएमए वर्गीकरण

दबाव के प्रारंभिक लक्षण दर्शने वाले उधारकर्ता के खातों को निम्नलिखित एसएमए वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है:

- एसएमए-0: 1-30 दिनों से बकाया मूलधन या ब्याज भुगतान।
- एसएमए-1: 31-60 दिनों तक अतिदेय।
- एसएमए-2: 61-90 दिनों से अधिक समय तक बकाया।

- 90 दिनों के बाद खाते को गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) के रूप में वर्गीकृत कर दिया जाता है।

4. डेटा उपयोग

- बैंक नए ऋण देने से पहले उधारकर्ता की ऋण-पात्रता का आकलन करने के लिए सीआरआईएलसी डेटा का उपयोग करते हैं।
 - आरबीआई प्रणालीगत जोखिमों का पता लगाने के लिए डेटा की निगरानी करता है और आवश्यक होने पर नियामक कार्रवाई करता है।
-

नियामक ढांचा और आरबीआई की भूमिका

सीआरआईएलसी भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के अधीन कार्य करता है, जो बैंकों और वित्तीय संस्थानों द्वारा अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए दिशानिर्देश जारी करता है।

1. विनियामक अनुपालन

- बैंकों को नियमित रूप से सीआरआईएलसी को बड़े ऋणों की सूचना देना अनिवार्य है।
- इसका अनुपालन न करने पर आरबीआई द्वारा जुर्माना लगाया जाएगा।

2. जोखिम-आधारित पर्यवेक्षण

- आरबीआई बैंकों के जोखिम-आधारित पर्यवेक्षण के लिए सीआरआईएलसी डेटा का उपयोग करता है।
- यह सुनिश्चित करता है कि बैंक दबावग्रस्त खातों पर एनपीए में बदलने से पहले सुधारात्मक कार्रवाई करें।

3. जानकारी साझा करना

- सीआरआईएलसी बैंकों के बीच सूचना साझा करने की सुविधा प्रदान करता है, जिससे एक से अधिक उधार लेने और धोखाधड़ी का जोखिम कम हो जाता है।
-

सीआरआईएलसी के लाभ

सीआरआईएलसी बैंकिंग क्षेत्र, वित्तीय संस्थानों और नियामकों को कई लाभ प्रदान करता है:

बैंकों और वित्तीय संस्थानों के लिए

- **प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली:** वित्तीय प्रतिबलित खातों की शीघ्र पहचान करने में सहायता करती है।
- **बेहतर ऋण निर्णय लेना:** ऋणदाता ऋण स्वीकृत करने से पहले कई बैंकों में उधारकर्ता के कुल ऋणों का आकलन कर सकते हैं।

- खराब ऋणों में कमी: अधिक उधार देने से रोककर और जोखिम की शीघ्र पहचान करके, सीआरआईएलसी एनपीए को कम करने में योगदान देता है।
- धोखाधड़ी की रोकथाम: यह प्रणाली विभिन्न नामों से कई ऋण प्राप्त करने का प्रयास करने वाले उधारकर्ताओं का पता लगाने में मदद करती है।

आरबीआई और नियामकों के लिए

- उन्नत पर्यवेक्षण: आरबीआई बड़े ऋणों पर नजर रख सकता है और वित्तीय संकट की स्थिति में हस्तक्षेप कर सकता है।
- बेहतर वित्तीय स्थिरता: प्रणालीगत जोखिमों को कम करके बैंकिंग क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने में मदद मिलती है।
- पारदर्शिता और जवाबदेही: यह सुनिश्चित करता है कि बैंक विवेकपूर्ण ऋण देने की प्रथाओं का पालन करें।

उधारकर्ताओं के लिए

- वित्तीय अनुशासन को बढ़ावा: नकारात्मक वर्गीकरण से बचने के लिए उधारकर्ताओं द्वारा समय पर भुगतान करने की अधिक संभावना होती है।
- ऋण तक बेहतर पहुंच: ऋण-योग्य उधारकर्ताओं को ऋणदाता के बेहतर विश्वास से लाभ मिलता है।

सीआरआईएलसी की चुनौतियाँ और सीमाएँ

अपने अनेक लाभों के बावजूद, सीआरआईएलसी को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है:

1. डेटा सटीकता और रिपोर्टिंग मुद्दे

- बैंक सटीक आंकड़े देने में विफल हो सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उधारकर्ता खातों का गलत वर्गीकरण हो सकता है।

2. सीमित कवरेज

- सीआरआईएलसी केवल बड़े उधारकर्ताओं (5 करोड़ रुपये और उससे अधिक) पर नजर रखता है, छोटे और मध्यम उद्यमों (एसएमई) और खुदरा उधारकर्ताओं को छोड़ देता है।

3. दबाव के प्रति विलंबित प्रतिक्रिया

- हालांकि सीआरआईएलसी प्रारंभिक चेतावनी देता है, लेकिन बैंक कार्बाई में देरी कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप एनपीए बढ़ सकता है।

4. डेटा गोपनीयता चिंताएँ

- उधारकर्ता की जानकारी को कई ऋणदाताओं के बीच साझा करने से डेटा सुरक्षा और गोपनीयता के बारे में चिंताएं उत्पन्न होती हैं।

5. परिचालन चुनौतियाँ

- कुछ बैंकों के पास सीआरआईएलसी डेटा को कुशलतापूर्वक रिपोर्ट करने के लिए प्रौद्यौगिकीय बुनियादी ढांचे का अभाव हो सकता है।

भविष्य की संभावनाएं और संवर्द्धन

सीआरआईएलसी की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए कई सुधारों पर विचार किया जा सकता है:

1. कवरेज का विस्तार

- सीआरआईएलसी रिपोर्टिंग में लघु एवं मध्यम उद्यमों (एसएमई) को शामिल करने से वित्तीय निगरानी में सुधार हो सकता है।

2. वास्तविक समय रिपोर्टिंग

- त्रैमासिक और मासिक रिपोर्टिंग से वास्तविक समय डेटा अपडेट की ओर बढ़ने से प्रतिक्रिया समय में सुधार हो सकता है।

3. क्रेडिट ब्यूरो के साथ एकीकरण

- सीआरआईएलसी को सिविल और एक्सपेरियन जैसे क्रेडिट ब्यूरो के साथ जोड़ने से व्यापक क्रेडिट मूल्यांकन उपलब्ध हो सकता है।

4. उन्नत विश्लेषिकी और एआई

- सीआरआईएलसी डेटा का विश्लेषण करने के लिए एआई और मशीन लर्निंग का उपयोग करने से प्रारंभिक चेतावनी तंत्र में सुधार हो सकता है।

5. मजबूत नियामक उपाय

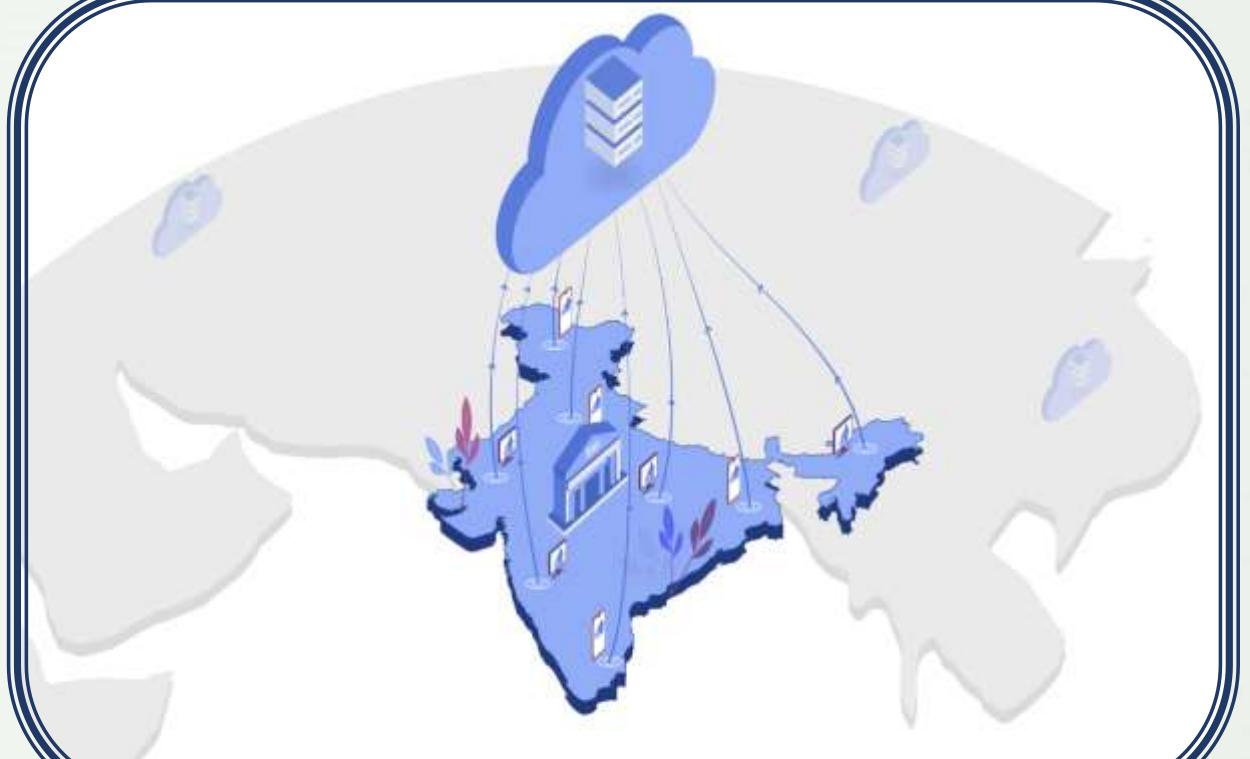
- गैर-अनुपालन और धोखाधड़ीपूर्ण रिपोर्टिंग के लिए कठोर दंड से डेटा की सटीकता सुनिश्चित हो सकती है।
-

निष्कर्ष

सीआरआईएलसी ने बैंकों द्वारा वृहद क्रृणों के प्रबंधन के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव किया है। वित्तीय दबाव का जल्द पता लगाने, क्रृष्ण जोखिम प्रबंधन में सुधार और विनियामक निगरानी को बढ़ाने के लिए एक मजबूत तंत्र प्रदान किया है। बेहतर निर्णय लेने और प्रणालीगत जोखिमों को कम करने में सक्षम बनाकर, सीआरआईएलसी भारत की बैंकिंग प्रणाली को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

हालांकि, डेटा सटीकता, गोपनीयता संबंधी चिंताओं को दूर करना और सिस्टम कवरेज का विस्तार करना इसकी निरंतर सफलता के लिए महत्वपूर्ण होगा। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी विकसित होती है, उन्नत विश्लेषण और वास्तविक समय की निगरानी को एकीकृत करना सीआरआईएलसी की प्रभावशीलता को और बढ़ाएगा, जिससे यह भारत के वित्तीय स्थिरता ढांचे की आधारशिला बन जाएगा।

सचिन श्रीपाल जैन
उप महाप्रबंधक (वित्त)



भारत सरकार के मिनीरत्न, नवरत्न तथा महारत्न केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम (सीपीएसई)

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईआरएफसी) की स्थापना 12 दिसंबर, 1986 को एक शत-प्रतिशत सरकारी स्वामित्व वाली कंपनी के रूप में की गई थी। यह रेल मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन कार्य करता है। इसने भारतीय रेलवे के विस्तार और आधुनिकीकरण के वित्तपोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मार्च, 2018 में इसे “मिनीरत्न श्रेणी-I” का दर्जा दिया गया। दिनांक 03 मार्च, 2025 को सरकार द्वारा आईआरएफसी को प्रतिष्ठित “नवरत्न” का दर्जा प्रदान किया गया है। निश्चय ही यह अत्यंत गौरव की बात है और बहुत महत्वपूर्ण उपलब्धि है। नवरत्न का दर्जा प्राप्त करना निश्चय ही आईआरएफसी की वित्तीय मजबूती का प्रमाण है।

नवरत्न दर्जा मिलने से उपक्रमों को कई लाभ मिलते हैं। वह संयुक्त उद्यम, सहायक कंपनियां बना सकते हैं और प्रत्यक्ष सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता के बिना विलय या अधिग्रहण कर सकते हैं। वे स्वतंत्र व्यवसाय और निवेश का निर्णय ले सकते हैं, वे अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्रवेश कर सकते हैं, रणनीतिक गठबंधन बना सकते हैं। इन्हें वित्तीय रूप से स्थिर माना जाता है और वे निवेशकों का अधिक विश्वास आकर्षित करती है। मजबूत वित्तीय प्रदर्शन शेयरधारकों के लिए बेहतर रिटर्न प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

सीपीएसई को 3 श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:- **मिनीरत्न, नवरत्न और महारत्न।** इनकी जानकारी इस प्रकार है:-

लोक उद्यम विभाग सभी केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (सीपीएसई) का नोडल विभाग है। यह सभी सीपीएसई में कार्यनिष्पादन सुधार एवं मूल्यांकन, स्वायत्तता तथा वित्तीय शक्तियों के प्रत्यायोजन और कार्मिक प्रबंधन के बारे में नीतिगत दिशानिर्देश तैयार करता है। सीपीएसई ऐसी कंपनियां हैं जिनमें केन्द्र सरकार या अन्य सीपीएसई की प्रत्यक्ष हिस्सेदारी 51% या उससे अधिक है। वर्तमान में, **49 मिनीरत्न, 26 नवरत्न और 14 महारत्न सीपीएसई हैं।**

1. मिनीरत्न

- **मिनीरत्न श्रेणी - 1:** मिनीरत्न कंपनी श्रेणी 1 का दर्जा प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि कंपनी ने पिछले तीन वर्षों से लगातार लाभ प्राप्त किया हो तथा तीन साल में एक बार कम से कम 30 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया हो। इन कंपनियों को 500 करोड़ रुपये तक निवेश करने की अनुमति है।
- **मिनीरत्न श्रेणी - 2:** सीपीएसई द्वारा पिछले तीन साल से लगातार लाभ अर्जित किया हो और उसकी निवल संपत्ति सकारात्मक हो, वे मिनीरत्न-II का दर्जा देने के लिए पात्र हैं। इन कंपनियों को 300 करोड़ रुपये तक निवेश करने की अनुमति है।
- **मिनीरत्न सीपीएसई** को सरकार के किसी भी क्रृष्ण पर क्रृष्ण/व्याज भुगतान के पुनर्भुगतान में चूक नहीं करनी चाहिए।
- **मिनीरत्न सीपीएसई** कंपनियां बजटीय सहायता या सरकारी गारंटी पर निर्भर नहीं होंगी।

मिनीरत्न योजना की शुरुआत वर्ष 1997 में सार्वजनिक क्षेत्र को अधिक कुशल एवं प्रतिस्पर्द्धी बनाने और लाभ कमाने वाले सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों को अधिक स्वायत्तता तथा शक्तियों का प्रत्यायोजन प्रदान करने के नीतिगत उद्देश्य के अनुसरण में की गई थी।

2. नवरत्न

मिनीरत्न श्रेणी - I और अनुसूची 'ए' के तहत आने वाली सीपीएसई जिन्होंने पिछले पांच वर्षों में से तीन में समझौता ज्ञापन प्रणाली के तहत 'उत्कृष्ट' या 'बहुत अच्छी' रेटिंग प्राप्त की है और छह प्रदर्शन मापदंडों में 60 या उससे अधिक का समग्र स्कोर प्राप्त किया हो। ये छह मापदंड हैं:

- शुद्ध पूँजी और शुद्ध लाभ
- उत्पादन की कुल लागत के सापेक्ष मैनपॉवर पर आने वाली कुल लागत
- मूल्यहास के पहले कंपनी का लाभ, वर्किंग कैपिटल पर लगा टैक्स और ब्याज
- ब्याज भुगतान से पहले लाभ और कुल बिक्री पर लगा कर
- प्रति शेयर कमाई
- अंतर-क्षेत्रीय प्रदर्शन

नवरत्न योजना वर्ष 1997 में शुरू की गई थी ताकि उन सीपीएसई की पहचान की जा सके जो अपने संबंधित क्षेत्रों में तुलनात्मक लाभ प्राप्त करते हैं और वैश्विक खिलाड़ी बनने के उनके अभियान में उनका समर्थन करते हैं।

3. महारत्न

ऐसे नवरत्न सीपीएसई जिनका पिछले तीन वर्षों में औसत वार्षिक कारोड़ रु से अधिक हो और औसत वार्षिक शुद्ध लाभ 5000 करोड़ रु. से अधिक हो उन्हें महारत्न का दर्जा प्रदान किया जाता है। जिससे इन्हें वित्तीय और परिचालन स्वतंत्रता प्राप्त होती है। वे बड़े बुनियादी ढाँचे के प्रोजेक्ट्स को लागू कर सकती हैं और वैश्विक स्तर पर विस्तार कर सकती हैं। उन्हें भारतीय स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध होना अनिवार्य है।

सीपीएसई के लिए **महारत्न योजना** मई, 2010 में शुरू की गई थी, ताकि मेगा सीपीएसई को अपने संचालन का विस्तार करने और वैश्विक दिग्गजों के रूप में उभरने के लिए सशक्त बनाया जा सके।

अजय कक्कड़
सहायक प्रबंधक (मा. सं. एवं प्रशासन)

लेख

दर्द के पार – Beyond the Pain

आज एक ईसाई मित्र-दम्पत्ति का विवाह दिवस था। यद्यपि यह पौष मास है, जो हमारे हिन्दुओं के यहाँ विवाह के लिए विशेष प्रिय नहीं माना जाता। उन्हें बधाई देने को जैसे ही मैंने फोन उठाया, पास से एक मधुर बांगला स्वर—संचारी (बिलकुल बंगाली नाम)—कह उठी,

"आज ही के दिन, दो वर्ष पूर्व आपकी सर्जरी हुई थी। अस्पताल के बिस्तर से ही आपने उन्हें बधाई दी थी—याद है?"

स्मृति की परतें खुल गई—दिल्ली के नॉर्डन रेलवे सेंट्रल हॉस्पिटल की वह सर्जरी! कुल छह ऑपरेशन थियेटर होते हुए भी, एक ज़रूरी केस आ जाने से तीन बार तिथि टल चुकी थी। परन्तु जो बात मन को छ गई, वह यह कि हर बार स्वयं शल्य चिकित्सक महोदय—जो मेरे ही पास के रेलवे एन्क्लेव, पंचकुइयाँ रोड में रहते थे—कॉल करके आग्रहपूर्वक कहते,

"एक कैंसर-रोगी की अति-आपातकालीन शल्यक्रिया करनी होगी। क्या आपकी तिथि थोड़ी आगे बढ़ा दूँ? चिंता न करें, शीघ्र ही कर देंगे। आप रेलवे बोर्ड के हैं, मेरे पड़ोसी हैं, इसलिए सीधे आपको ही कह रहा हूँ।"

शरीर पर छुरी-कैंची चलना एक साधारण बात नहीं होती। परन्तु एक बात उस दिन अनुभूत हुई— Health is a Stern Retaliator-स्वास्थ्य एक कठोर प्रतिशोधक है—यदि उपेक्षा की जाए, तो हानि निश्चित है।

स्मृतिपट पर अंकित हैं हर्षोल्लास से भरे उत्सवमय रात्रि-वेला, तो पिता के शव की पहरेदारी में बिताई रातें भी अपना अटल स्थान बनाए हुए हैं। उन्हीं में एक और जुड़ गई—शल्यक्रिया के ठीक बाद की वह रात।

सर्जिकल ICU—नॉर्डन रेलवे हॉस्पिटल। तीस बिस्तर, सभी भरे हुए। रात्रि के दस बजते ही प्रकाश बुझा दिया गया। सभी रोगी ऑपरेशन के बाद की अवस्था में। सिरहाने सलाइन की बोतलें, कहीं ऑक्सीजन, कहीं जीवनरक्षक उपकरण। हर एक कर्मी—सिस्टर, ब्रदर, रेजिडेंट डॉक्टर—अलग-अलग एनक्लोज़र में। लगभग पंद्रह स्वास्थ्यकर्मी। रोगी सब अर्धनिद्रित।

जैसे ही ऐनेस्थीसिया का असर कम होने लगा, पीड़ा बढ़ती चली गई। दाँत भींच कर भी संयम नहीं रखा जा रहा था— शरीर अपने आप ऐंठता चला गया। शायद 'ओ माँ गो!' जैसी करुण ध्वनि मुँह से निकल ही पड़ी।

तभी प्रतीत हुआ, सिरहाने कोई श्वेताकृति खड़ी है। गर्दन घुमा कर देखा—एक श्वेतवसना नवयुवती। पास आकर अपना परिचय दिया—अभी-अभी नियुक्त हुई एक प्रशिक्षू नर्स।

वह बोली,

"अंकल, कोई चिंता न करें, मैं यहीं हूँ। आप मेरे पिताजी से भी बड़े होंगे (हालाँकि..., मेरी माँ ने मुझे एकल रूप से ही पाला)।"

गला रुंध गया उसका।

"थोड़ी बात करूँ आपसे?"

— "हाँ माँ, मेरा बेटा भी तुम्हारे ही जैसा होगा। बोलो, क्या कहना चाहती हो?"

"क्या पीड़ा बहुत असहा है? चाहें तो पेन-किलर ड्रिप शुरू कर दूँ?"

— "यदि संभव हो... देखो ज़रा।"

फाइल देखकर लौटी,

"डॉक्टर ने लिखा है 'SOS'—चाहें तो दे सकती हूँ। थोड़ी देर बैठूँ आपके पास?"

— "हाँ माँ, कहो न।"

"ज्ञान नहीं ढूँगी अंकल, बस इतना सोचिए कि ईश्वर ने आपको दर्द का अनुभव करने की क्षमता दी है। कितने ही रोगी ऐसे होते हैं जो दर्द का बोध ही नहीं कर पाते, न रोग का पता चलता है, न उपचार सम्भव हो पाता है। आप तो इस दृष्टि से ईश्वर की कृपा के पात्र हैं!"

— "क्या सुंदर बात कही माँ तुमने। ज़रा और बैठो न।"

सर्जिकल ICU के बाहर से आती टावर लाइट की रश्मियों में उसका मुख प्रसन्नता से आलोकित हो उठा।

"मैं ज़रा देख आऊँ उधर, अभी लौटती हूँ, अंकल? देर नहीं होगी।"

मैं स्तब्ध रह गया—सरकारी अस्पताल की सिस्टर, मेरी अनुमति माँग रही थी!

कुछ ही देर में लौटी—एक मोहक मुस्कान के साथ।

— "रहने दो माँ, अब शायद दवा की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। आवश्यकता हुई तो बुलाऊँगा।"

"जानते हैं अंकल, हमारे नर्सिंग कॉलेज की वाइस-प्रिंसिपल और हॉस्टल सुपरिटेंडेंट कहा करती थीं—

'One can't relish the bliss of sleep and the beauty of sunrise at the same time.'"

चारों ओर बस धीमी साँसों की आवाज़, हल्की सिसकियाँ, या हिलने-डुलने की खामोश भनक। दीवार पर, पैरों की ओर, एक टिकी हुई ल्यूमिनस डायल की घड़ी—बचपन का स्मरण हो आया। घर में ऐसी ही एक घड़ी थी—हम उसे रेडियम डायल कहते थे—रात में वह जैसे सम्मोहक लगती थी।

सभी सोने का प्रयास कर रहे थे—किसी को सफलता, किसी को नहीं। पर वह नर्स—मानो हवा में तैरती हुई—हर रोगी के पास जा रही थी। कहीं मोबाइल की रोशनी में सलाइन की जाँच, कहीं बातचीत, किसी की चादर ठीक कर रही थी, किसी का मुख पोंछ रही थी। एक सजीव फ्लोरेंस नाइटिंगेल!

नींद आने से पूर्व अंतिम समय देखा—तीन बजे हैं, घंटे और मिनट की सुइयाँ पूर्ण समकोण पर।

एक गीले फेस टिशू से जब उसने मेरा ललाट पोंछा—कब नींद आई, पता ही न चला।

कुछ टेस्ट्स के कारण एक दिन पूर्व ही भर्ती हो गया था। वहाँ ICU में सुबह छह बजते ही कोई चाय नहीं लाई, न कोई जगाया। नींद खुली भी देर से।

"कैसे हैं?"—एक वरिष्ठ सिस्टर का प्रश्न।

— "नहीं, अब कुछ भी पीड़ा नहीं, पूरी तरह ठीक हूँ।"

"डॉक्टर का विजिट हो गया है, ग्यारह बजे तक डिस्चार्ज कर देंगे। घरवालों को कहिए दवाएँ ले लें। मैं चाहता हूँ कि आपको दोबारा न आना पड़े—नियमों का पालन करेंगे तो अच्छा रहेगा। अगले सप्ताह चेक-अप करवा लीजिएगा।"

मैंने उस लड़की का हाल पूछा।
वो बोलीं,

"अत्यंत परिश्रमी, कर्तव्यनिष्ठ कन्या है। उसकी ड्यूटी समाप्त हो चुकी है, रिलीवर आ गया है। उसकी माँ प्रतिदिन आती हैं उसे ले जाने। अत्यंत दृढ़संकल्पी और आत्मगौरव से परिपूर्ण। एक बार रिलीवर नहीं आया, तो माँ ने उसे अगले शिफ्ट तक कार्य करने को प्रेरित किया, और स्वयं बाहर कुर्सी पर बैठी रहीं।"

उस दिन सहज बातचीत में उन्होंने कहा था—

"Let the wreath of victory adorn the victor alone, for none has ever sought a share in its splendour. Yet, let it not be forgotten—no soul, none at all, holds the right to strip the vanquished of the fleeting shade of a wandering cloud."

— 'जय की माला विजयी के ही गले की शोभा बने—इसकी साझेदारी कभी किसी ने नहीं माँगी। परन्तु जो पराजित प्रतीत होता है, उसकी भी अस्थायी मेघछाया को छीन लेने का अधिकार किसी को नहीं है, किसी को भी नहीं।'

स्वामी-परित्यक्ता वह स्त्री, क्रच के सहारे चलती हैं, फिर भी रोज़ अपनी बेटी को लेने आती हैं। तीसरी मंज़िल तक सीढ़ियाँ चढ़ती हैं—कहती हैं, 'लिफ्ट रोगियों के लिए है, मैं रोगी बनना नहीं चाहती।'

माँ और बेटी—दोनों के मुख पर हर समय मुस्कान।

उत्पल मजुमदार
परामर्शदाता (वित्त)



1. हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है: कमलापति त्रिपाठी
2. देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है: नेताजी सुभाष चंद्र बोस

जोखिम उठाना वैकल्पिक नहीं है

जोखिम को परिभाषित किया गया है “ऐसी घटना की संभावना, जिससे वास्तविक परियोजना की परिस्थितियाँ उन अनुमानों से भिन्न हो जाएँ जो लाभ और लागत का पूर्वानुमान करते समय की गई थीं।” जोखिम के बारे में रोचक बात यह है कि यह आमतौर पर पहले की स्थिति की तुलना में अधिक लाभ या बड़ी हानि का कारण बनता है। जोखिम लेना प्रगति की नींव है। इतिहास में उद्यमियों, वैज्ञानिकों और नेताओं ने अनिश्चितता को अपनाया है ताकि वे नई सफलताएँ प्राप्त कर सकें। जोखिम लेना नवाचार को बढ़ावा देता है, प्रतिस्पर्धा को प्रेरित करता है, और व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक विकास के नए अवसर पैदा करता है। बिना जोखिम के न तो कोई नया आविष्कार होता, न कोई नया व्यवसाय शुरू होता, और न ही कोई तकनीकी प्रगति होती।

प्राचीन भारत में, कई लोग जिन्हें हम ऋषि कहते हैं, उन्होंने जीवन की सभी सुविधाओं को त्याग दिया और अत्यधिक तपस्वी जीवन अपनाया ताकि वे यह जान सकें कि सभी प्रकार के दुःखों से कैसे पार पाया जाए। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने उत्तर खोज लिए और यह शायद मानव इतिहास का सबसे बड़ा और साहसी प्रयास रहा है।

हाल के समय में, एलन मस्क को इतिहास के सबसे बड़े जोखिम उठाने वालों में से एक माना जाता है, खासकर Tesla और SpaceX जैसी परियोजनाओं के कारण, जहाँ उन्होंने लगातार अत्यंत महत्वाकांक्षी योजनाओं पर बड़े दांव लगाए — जिनमें संभावित लाभ तो था, पर भारी असफलता का खतरा भी।

मार्क जुकरबर्ग, जो संभवतः हमारे समय के सबसे प्रसिद्ध उद्यमियों में से एक हैं, ने कहा था:

“एक ऐसी दुनिया में जो बहुत तेज़ी से बदल रही है, एकमात्र रणनीति जो निश्चित रूप से असफल होगी, वह है जोखिम न लेना।”

सारा पैरिश, प्रसिद्ध अंग्रेजी अभिनेत्री ने कहा:

“डर के साथ जीना हमें जोखिम लेने से रोकता है, और अगर आप शाखा पर नहीं चढ़ते, तो आप कभी भी सबसे अच्छा फल नहीं पा सकते।”

जोखिम लेने के लाभ कई हैं:

1. हम अपने अनुभवों से सीखते हैं कि भविष्य में बेहतर निर्णय कैसे लिए जाएँ।
2. यह आत्मविश्वास को बढ़ाता है। डर और संदेह पर काबू पाकर हम अधिक लचीले और साहसी बनते हैं।
3. जोखिम लेना हमें असफलताओं और झटकों से उबरना सिखाता है।

4. यह हमें नए विचारों और चुनौतियों को अपनाने में सहायता करता है, जिससे विकास होता है।
5. जोखिम लेने से हम अक्सर नए समाधान सोचते हैं और नई विधियों की खोज करते हैं।
6. और अंततः, यह हमें उन लोगों पर प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त देता है जो जोखिम नहीं लेते।

जोखिम लेने का दूसरा पहलू भी है — यह हानियों और प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचा सकता है। संभावित नुकसान या नकारात्मक परिणाम अक्सर हमें जोखिम लेने से रोकते हैं।

वास्तव में, कई ऐसे संगठनों के उदाहरण हैं जो अत्यधिक महत्वाकांक्षी होकर और जोखिम उठाकर विफल हो गए। वित्तीय नुकसान, प्रतिष्ठा पर आघात, मानसिक तनाव और अनिश्चितता — ये सब किसी भी संस्था के लिए अत्यंत कष्टदायक हो सकते हैं।

तो, व्यवसायों को क्या करना चाहिए? क्या उन्हें जोखिम लेना चाहिए, और यदि हाँ, तो कितना? ऐसे सभी प्रश्न हमें “जोखिम प्रबंधन” की ओर ले जाते हैं। जोखिम प्रबंधन सिद्धांतों और अभ्यासों का एक समूह है जो यह निर्धारित करता है कि कोई कंपनी जोखिमों को कैसे संभालती है। इसमें सक्रियता, नियंत्रण, निगरानी, और जवाबदेही शामिल होती है।

व्यवसायों को कई प्रकार के जोखिमों का सामना करना पड़ता है — रणनीतिक जोखिम, क्रृषि जोखिम, बाजार जोखिम, अनुपालन जोखिम, परिचालन जोखिम, सामाजिक जोखिम, नियामक जोखिम आदि। सफल संगठन जोखिम और लाभ के बीच संतुलन बनाते हैं। अत्यधिक सतर्कता अवसरों को चूकने का कारण बन सकती है, जबकि लापरवाह निर्णय विफलता में बदल सकते हैं। यदि जोखिमों का सही आकलन करके सूझबूझ से निर्णय लिया जाए, तो परिणामों को बेहतर बनाया जा सकता है।

अक्सर जोखिम प्रबंधन को न्यूनतम जोखिम लेने के रूप में देखा जाता है। लेकिन ऐसा नहीं है। कई बार जब जोखिम प्रबंधन की चर्चा बहुत अधिक होती है, तो संस्थाएँ अत्यधिक सतर्क, निष्क्रिय और रक्षात्मक हो जाती हैं तथा केवल सुरक्षित विकल्पों को देखती हैं। इसका परिणाम धीमी वृद्धि और अवसरों की चूक हो सकता है।

जोखिम प्रबंधन में निम्नलिखित शामिल होते हैं:

- संभावित परिणामों की गणना करें और वैकल्पिक योजनाएँ तैयार रखें।
- असफलता से बचने की बजाय लक्ष्य प्राप्ति को प्रेरणा बनायें।
- यह समझें कि असफलता आपका मूल्यांकन नहीं करती, बल्कि सफलता की राह का हिस्सा है।
- दबाव में निर्णय लेना सीखें।

- यह जानें कि अनिश्चित परिस्थितियों में चीजें कितनी जल्दी बदल सकती हैं।

4 Ps मॉडल — Predict, Prevent, Prepare, Protect जोखिम आकलन और प्रबंधन का एक सामान्य ढाँचा है।

जोखिम प्रबंधन के उपकरण विस्तृत और विविध हैं, पर एक सामान्य और महत्वपूर्ण पहलू है — सुदृढ़ गवर्नेंस। यह सामान्यतः देखा गया है कि कई बड़ी संस्थाएँ जोखिम गवर्नेंस की खराब संरचना और कार्यप्रणालियों के कारण गंभीर नुकसान या पतन का शिकार हुई हैं।

निष्कर्षतः, जोखिम लेना और जोखिम प्रबंधन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

जहाँ जोखिम अपनाने से प्रगति और सफलता मिलती है, वहाँ जोखिमों का प्रबंधन स्थिरता और दीर्घकालिकता सुनिश्चित करता है।

यदि हम गणनात्मक जोखिम लेना सीखें, प्रभावी तकनीकें अपनाएँ, और अच्छी गवर्नेंस एवं प्रबंधन रणनीतियाँ लागू करें — तो हम अनिश्चितताओं में भी सफलता की राह बना सकते हैं।

अंत में, हमारे लिए यह मंत्र हो:

जोखिम के क्षेत्र में हम चलें सँभल,
बुद्धि की रोशनी से करें हर हला।
योजनाओं से सजग रहें सदा,
बदलते आसमान में पाएँ अपनी दिशा।

अजय चौधरी
मुख्य जोखिम अधिकारी



पान: स्वाद, परंपरा और संस्कृति का संगम

पान, भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसे आमतौर पर भारत में स्वागत अथवा भोजन के उपरांत प्रस्तुत किया जाता है। पान को खाना और इसे खिलाना भारतीय संस्कृति का एक हिस्सा है जिसमें इसे खाने और खिलाने वाले, दोनों को ही प्रसन्नता का अनुभव होता है।

भारत में हर शहर का पान अपने स्वाद, बनावट और अनोखे अंदाज के लिए प्रसिद्ध है। चाहे बनारस का मीठा पान हो, लखनऊ का नवाबी अंदाज, या मुंबई का पान, हर शहर का अपना एक अलग मज़ा है।

पान का इतिहास एवं उत्पत्ति

पान की उत्पत्ति भारत में हुई है और यह भारतीय संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा है। पान का उपयोग विभिन्न सामाजिक और धार्मिक अवसरों पर किया जाता है। शादी, त्यौहार, और अन्य विशेष अवसरों पर पान का आदान-प्रदान एक परंपरागत एवं सांस्कृतिक आदत है जो रिश्तों की मिठास और सौहार्द को बढ़ावा देती है। यह न केवल स्वादिष्ट होता है, बल्कि इसके औषधीय गुण भी होते हैं जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माने जाते हैं। पान की परंपरा भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं में गहराई से जुड़ी हुई है, और इसके विभिन्न सांस्कृतिक आयाम हैं जो इसे अद्वितीय बनाते हैं।



पुरातात्त्विक अवशेषों और प्राचीन ग्रंथों में पान के उपयोग का उल्लेख मिलता है, जो इस बात का प्रमाण है कि यह एक प्राचीन भारतीय परंपरा है। वेदों, उपनिषदों, और आयुर्वेद जैसे प्राचीन ग्रंथों में पान के औषधीय गुणों और इसके सांस्कृतिक महत्व पर चर्चा की गई है। पान का उपयोग भारतीय राजा-महाराजाओं और साम्राज्यों की भव्यता का भी हिस्सा रहा है। भारतीय धर्म और आध्यात्मिकता में पान का एक विशेष स्थान है। पान का उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों और पूजा विधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेष रूप से, गणेश चतुर्थी, दीपावली, और नवरात्रि जैसे त्योहारों के दौरान पान का आदान-प्रदान किया जाता है। पान को देवी-देवताओं को चढ़ाने की परंपरा भी प्रचलित है, जिससे यह एक श्रद्धा और सम्मान का प्रतीक बन जाता है।

पान के तत्व और स्वास्थ्य लाभ



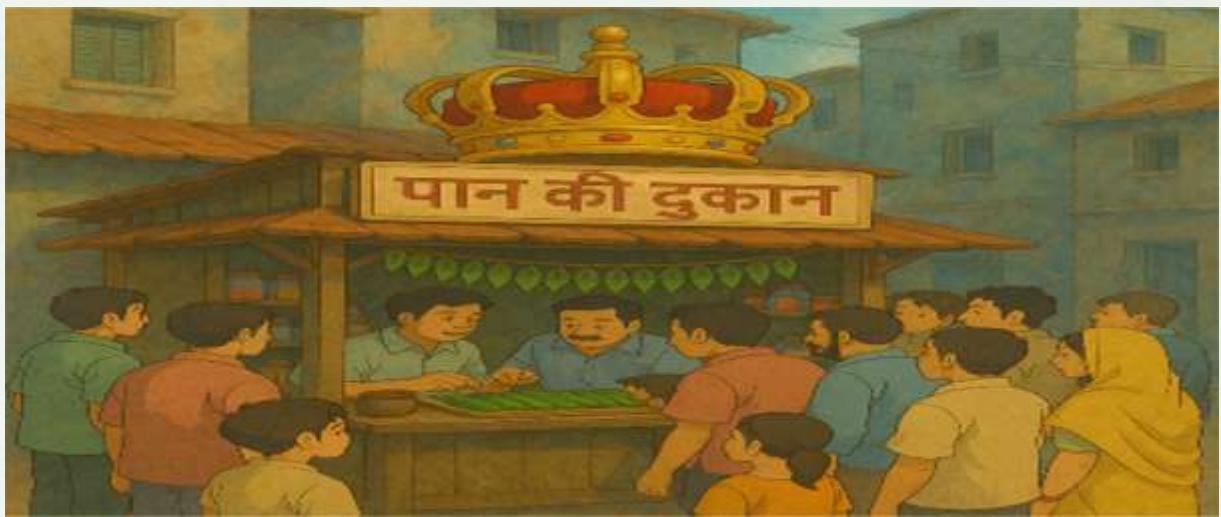
पान आमतौर पर ताजे पत्तों के साथ-साथ सुपारी, चूना, मीठा पाउडर, और कभी-कभी लौंग, इलायची, और केसर जैसे मसाले भी शामिल होते हैं। सुपारी में तंतू और मिनरल्स होते हैं जो पाचन प्रक्रिया को बेहतर बनाते हैं। चूना पेट को ठंडक पहुंचाने में मदद करता है और मुँह के रोगों को दूर करने में सहायक होता है। साथ ही, पान में पाए जाने वाले मसाले भी स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होते हैं और मुँह की ताजगी को बनाए रखते हैं।

यह एक प्रकार का शाकाहारी तंबाकू है। पान केवल एक स्वादिष्ट वस्तु नहीं है, बल्कि यह भारतीय परंपरा और संस्कृति का भी एक महत्वपूर्ण प्रतीक है।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

पान का सेवन भारतीय समाज में एक सांस्कृतिक गतिविधि के रूप में देखा जाता है। यह सामाजिक मेलजोल का एक माध्यम होता है। खासतौर पर, पान का आदान-प्रदान शादी समारोहों, धार्मिक अनुष्ठानों, और त्योहारों में बड़े हर्षोल्लास के साथ किया जाता है। यह एक प्रकार से सम्मान और स्नेह का प्रतीक भी है। साथ ही, पान की दुकानें गाँवों और शहरों में सामाजिक संवाद के केंद्र के रूप में कार्य करती हैं।

पान का आदान-प्रदान भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण सामाजिक गतिविधि है। पान की दुकानों और ठेलों पर बैठकर लोग आपस में बातें करते हैं, चर्चा करते हैं, और सामाजिक रिश्तों को मजबूत करते हैं। ये स्थल सामाजिक संवाद और मेलजोल के केंद्र होते हैं। विशेष सामाजिक अवसरों पर पान को चबाने के बाद उसकी लाल पीक को थूकना एक कला है।



नकारात्मक पहलू और चुनौतियाँ

आधुनिक युग में इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी सामने आए हैं। पान में अक्सर तंबाकू का प्रयोग किया जाता है, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। तंबाकू का सेवन कैंसर और अन्य गंभीर बीमारियों का कारण बन सकता है। इसलिए, आधुनिक समाज में पान का सेवन सीमित करने और इसके स्वास्थ्य पर प्रभावों को समझने की आवश्यकता है।

पान भारतीय संस्कृति का एक अनमोल हिस्सा है, जो हमें हमारी पारंपरिक जड़ों से जोड़ता है। इसके औषधीय गुण और सामाजिक महत्व इसे विशेष बनाते हैं। हालांकि, स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से इसके सेवन को नियंत्रित करना आवश्यक है। सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखते हुए, हमें स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना चाहिए और पान के सही प्रयोग को अपनाना चाहिए।

सतीश चंद्र श्रीवास्तव
कनिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन)



जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव
नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता: डॉ. राजेंद्र प्रसाद

लेख

काशी विश्वनाथ मंदिर का महत्व

काशी विश्वनाथ मंदिर, भारत के सबसे प्राचीन और पूजनीय मंदिरों में से एक है। यह मंदिर उत्तर प्रदेश के वाराणसी (प्राचीन नाम: काशी) में स्थित है और भगवान शिव को समर्पित है। हिंदू धर्म में काशी को मृत्यु और मोक्ष के मध्य एक पवित्र सेतु माना जाता है और काशी विश्वनाथ को "विश्व के राजा" की उपाधि प्राप्त है। इस मंदिर का आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, और सांस्कृतिक महत्व अत्यंत गहरा है।

1. धार्मिक महत्व

काशी विश्वनाथ मंदिर बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है, जिन्हें शिव के सबसे पवित्र रूप माना जाता है। ऐसा विश्वास है कि जो व्यक्ति यहां भगवान शिव के दर्शन करता है, उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह मंदिर न केवल हिंदुस्तान के तीर्थ यात्रियों का प्रमुख केंद्र है, बल्कि विश्वभर से श्रद्धालु यहाँ दर्शन के लिए आते हैं। काशी को शिव की नगरी कहा गया है और माना जाता है कि स्वयं भगवान शिव यहाँ निवास करते हैं।

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

काशी विश्वनाथ मंदिर का उल्लेख अनेक प्राचीन ग्रंथों, जैसे स्कंद पुराण और शिव पुराण में मिलता है। इतिहास के विभिन्न कालखंडों में यह मंदिर कई बार नष्ट किया गया और पुनः बनाया गया। वर्तमान मंदिर संरचना 1780 में मराठा रानी अहिल्याबाई होळकर द्वारा निर्मित करवाई गई थी।

3. आध्यात्मिक अनुभव

काशी विश्वनाथ मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि एक गहन आध्यात्मिक अनुभव का स्थान है। यहां आने वाले श्रद्धालु भगवान शिव का रुद्राभिषेक करते हैं, और अनेक लोग यहाँ दीर्घकालिक साधना भी करते हैं। विशेष अवसरों जैसे महाशिवरात्रि और सावन के महीने में यहाँ विशाल भक्तसमूह एकत्र होता है।

4. सांस्कृतिक महत्व

यह मंदिर भारतीय संस्कृति और स्थापत्य का अद्भुत उदाहरण है। इसके आस-पास की गलियाँ, घाट, संगीत, शास्त्र और तांत्रिक परंपराएँ भारत की सांस्कृतिक धरोहर को उजागर करती हैं। मंदिर परिसर और वाराणसी शहर भारतीय कला, साहित्य और अध्यात्म का जीवंत केंद्र हैं।

5. काशी विश्वनाथ कॉरिडोर

हाल ही में सरकार द्वारा "काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर" परियोजना के तहत मंदिर का पुनर्विकास किया गया है, जिससे यह अब और अधिक सुव्यवस्थित, भव्य और श्रद्धालुओं के लिए सुविधाजनक बन गया है। इससे मंदिर की गरिमा और भी बढ़ी है और आने वाले भक्तों की संख्या में भी वृद्धि हुई है।

काशी विश्वनाथ मंदिर केवल एक धार्मिक संरचना नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की आस्था, श्रद्धा और आत्मिक शांति का स्रोत है। यह मंदिर भारतीय सनातन परंपरा, शिव भक्ति और मोक्ष की अवधारणा का केंद्रबिंदु है। काशी विश्वनाथ का दर्शन हर हिन्दू का सपना होता है, और एक बार यहाँ आने के बाद व्यक्ति के जीवन में एक विशेष आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता है।

रितु
पत्नी श्री सुमित कुमार
कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारी



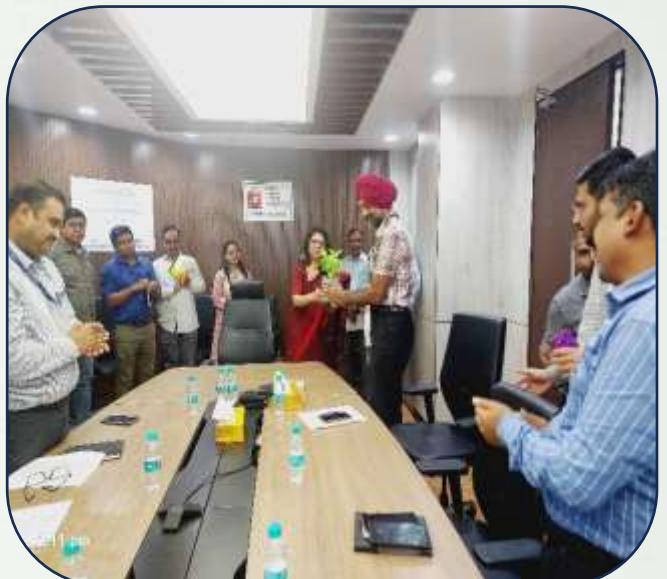
1. राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है: महात्मा गांधी
2. आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए, भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए: महावीर प्रसाद द्विवेदी

आईआरएफसी में आयोजित विशाल स्वच्छता अभियान

'श्रमदान' की झलकियाँ (दिनांक: 02.10.2024)



आईआरएफसी में आयोजित सतर्कता जागरूकता अभियान, 2024 की झलकियाँ (दिनांक: 09.10.2024)



आईआरएफसी में आयोजित 38वें स्थापना दिवस की झलकियाँ
(दिनांक: 12.12.2024)



38वां स्थापना दिवस



आईआरएफसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार दूबे, सभी कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।



निदेशक (वित्त), सुश्री शैली वर्मा आईआरएफसी की उपलब्धियों को बताते हुए।



मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री प्रणव कुमार मल्लिक आईआरएफसी
को 38वें स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए।



गर्व और हर्ष से अभिभूत आईआरएफसी के सभी अधिकारी/कर्मचारी

आईआरएफसी में आयोजित हिंदी कार्यशाला
(दिनांक: 18.12.2024)



आईआरएफसी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की झलकियां
(दिनांक: 24.12.2024)



आईआरएफसी की छमाही ई-पत्रिका “उड़ान” के छठे अंक का अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार दूबे के करकमलों से विमोचन

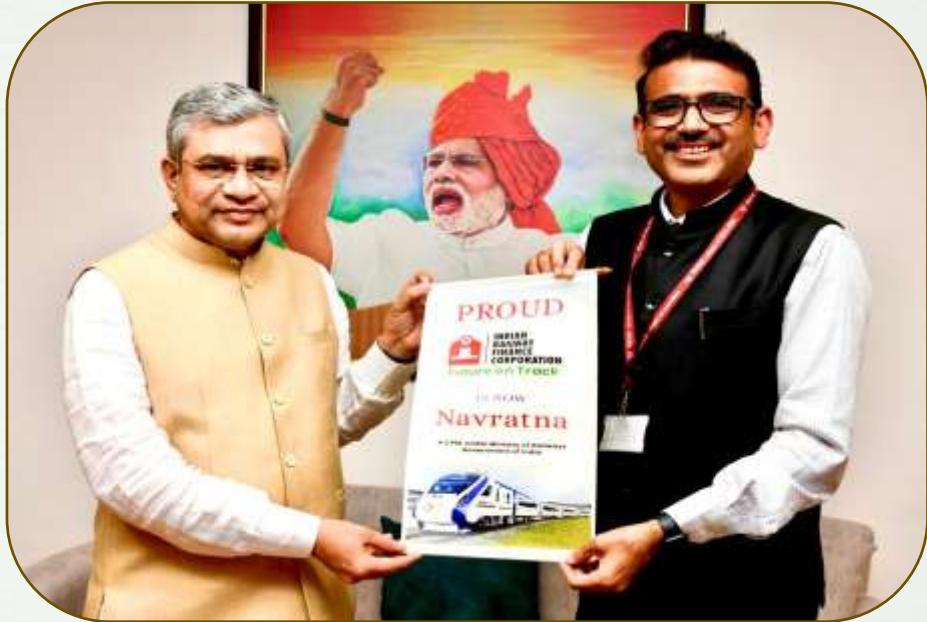


जयपुर, राजस्थान में आयोजित मध्य, पश्चिम एवं उत्तरी क्षेत्रों का
संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन (दिनांक: 17.02.2025)



मध्य, पश्चिम एवं उत्तरी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में आईआरएफसी के सहायक, श्री रोहन श्रीवास्तव ने भाग लिया।

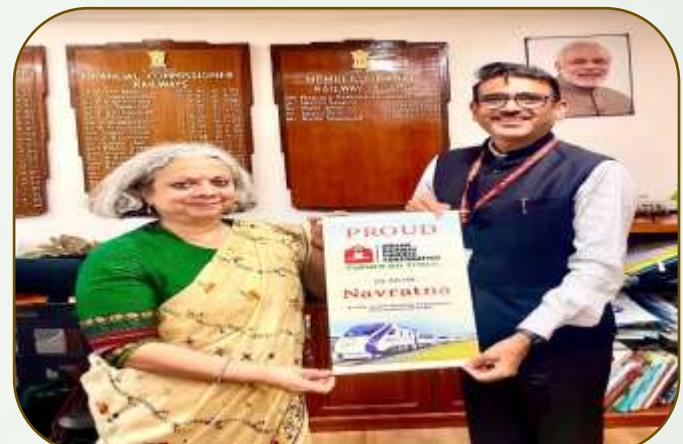
आईआरएफसी को 03 मार्च, 2025 को नवरत्न कंपनी का दर्जा प्राप्त होने
पर गौरव से परिपूर्ण क्षणों की झलकियां



माननीय रेल मंत्री, श्री अमित वैष्णव जी के समक्ष आईआरएफसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार दूबे नवरत्न पोस्टर का अनावरण करते हुए।



अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, रेलवे बोर्ड, पदेन प्रमुख सचिव, भारत सरकार, रेल मंत्रालय के साथ अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार दूबे।



सदस्य (वित्त), श्रीमती रूपा श्रीनिवासन तथा अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार दूबे।

आईआरएफसी को 'नवरत्न' दर्जा प्राप्त होने के उपलक्ष्य में 05 मार्च, 2025 को ताज
महल मानसिंह होटल, नई दिल्ली में संपन्न प्रेस कॉन्फ्रेंस की झलकियां



आईआरएफसी का निदेशक मंडल तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी (बायीं ओर)



आईआरएफसी का निदेशक मंडल तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी (दायीं ओर) 'नवरत्न' पोस्टर का अनावरण करते हुए।

आईआरएफसी को 'नवरत्न' दर्जा प्राप्त होने के उपलक्ष्य में 05 मार्च, 2025 को ताज
महल मानसिंह होटल, नई दिल्ली में संपन्न प्रेस कॉन्फ्रेंस की झलकियाँ



आईआरएफसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार द्वारे प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए।



आईआरएफसी की निदेशक (वित्त), सुश्री शैली वर्मा प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए।

आईआरएफसी को 'नवरत्न' दर्जा प्राप्त होने के उपलक्ष्य में 05 मार्च, 2025 को ताज
महल मानसिंह होटल, नई दिल्ली में संपन्न प्रेस कॉन्फ्रेंस की झलकियां



आईआरएफसी के निदेशक मंडल के नामित
निदेशक, श्री बलदेव पुरुषार्थ शुभकामनाएं
देते हुए।



आईआरएफसी के निदेशक मंडल के
नामित निदेशक, श्री अभिषेक कुमार
अपने विचार प्रस्तुत करते हुए।



आईआरएफसी के मुख्य सतर्कता अधिकारी,
श्री प्रणव कुमार मल्लिक अपने आर्थिक विचार देते हुए।

**आईआरएफसी को 'नवरत्न' दर्जा प्राप्त होने के उपलक्ष्य में 05 मार्च, 2025 को ताज महल मानसिंह होटल, नई दिल्ली में
संपन्न प्रेस कॉन्फ्रेंस में प्रेस रिपोर्टरों को इंटरव्यू देते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार द्वारे**



कहानी

संबंधों में हानि लाभ नहीं देखा जाता

विनोद हाईवे पर गाड़ी चला रहा था।

सड़क के किनारे उसे एक 12-13 साल की लड़की तरबूज बेचती दिखाई दी। विनोद ने गाड़ी रोक कर पूछा "तरबूज की क्या रेट है बेटा? " लड़की बोली " 50 रुपये का एक तरबूज है साहब।"

पीछे की सीट पर बैठी विनोद की पत्नी बोली " इतना महंगा तरबूज नहीं लेना जी। चलो यहाँ से। "विनोद बोला "महंगा कहाँ है इसके पास जितने तरबूज है कोई भी पांच किलो से कम का नहीं होगा। 50 रुपये का एक दे रही है तो 10 रुपये किलो पड़ेगा हमें। बाजार से तो तू बीस रुपये किलो भी ले आती है। "

विनोद की पत्नी ने कहा तुम रुको मुझे मोल भाव करने दो।" फिर वह लड़की से बोली "30 रुपये का एक देना है तो दो वरना रहने दो। " लड़की बोली " 40 रुपये का एक तरबूज तो मैं खरीद कर लाती हूँ आंटी। आप 45 रुपये का एक ले लो। इससे सस्ता मैं नहीं दे पाऊँगी।"

विनोद की पत्नी बोली" झूठ मत बोलो बेटा। सही रेट लगाओ देखो ये तुम्हारा छोटा भाई है न? इसी के लिए थोड़ा सस्ता कर दो।" उसने खिड़की से झाँक रहे अपने चार वर्षीय बेटे की तरफ इशारा करते हुए कहा।

सुंदर से बच्चे को देख कर लड़की एक तरबूज हाथों में उठाते हुए गाड़ी के करीब आ गई। फिर लड़के के गालों पर हाथ फेर कर बोली " सचमुच मेरा भाई तो बहुत सुंदर है आँटी।" विनोद की पत्नी बच्चे से बोली "दीदी को नमस्ते बोलो बेटा। " बच्चा प्यार से बोला "नमस्ते दीदी। लड़की ने गाड़ी की खिड़की खोल कर बच्चे को बाहर निकाल लिया फिर बोली " "तुम्हारा क्या नाम है भैया? "

लड़का बोला " मेरा नाम गोलू है दीदी। " बेटे को बाहर निकालने के कारण विनोद की पत्नी कुछ असहज हो गई। तुरंत बोली "अरे बेटा इसे वापस अंदर भेजो। इसे डस्ट से एलर्जी है।" लड़की उसकी आवाज पर ध्यान न देते हुए लड़के से बोली "तू तो सचमुच गोल मटोल है रे भाई। तरबूज खाएगा? "लड़के ने हाँ मेर्दन हिलाई तो लड़की ने तरबूज उसके हाथों मे थमा दिया।

पाँच किलो का तरबूज गोलू नहीं संभाल पाया। तरबूज फिसल कर उसके हाथ से नीचे गिर गया और फूट कर तीन चार टुकड़ों में बंट गया। तरबूज के गिर कर फुट जाने से लड़का रोने लगा।

लड़की उसे पुचकारते हुए बोली अरे भाई रो मत। मैं दूसरा लाती हूँ। फिर वह दौड़कर गई और एक और बड़ा सा तरबूज उठा लाई।

जब तक वह तरबूज उठा कर लाई इतनी देर में विनोद की पत्नी ने बच्चे को अंदर गाड़ी में खींच कर खिड़की बन्द कर ली। लड़की खुले हुए शीशे से तरबूज अंदर देते हुए बोली "ले भाई ये बहुत मीठा निकलेगा।" विनोद चुपचाप बैठा लड़की की हरकतें देख रहा था।

विनोद की पत्नी बोली "जो तरबूज फूटा है मैं उसके पैसे नहीं दूँगी। वह तुम्हारी गलती से फूटा है।" लड़की मुस्कराते हुए बोली "उसको छोड़ो आंटी। आप इस तरबूज के पैसे भी मत देना। ये मैंने अपने भाई के लिए दिया है।"

इतना सुनते ही विनोद और उसकी पत्नी दोनों एक साथ चौंक पड़े। विनोद बोला "नहीं बिट्या तुम अपने दोनों तरबूज के पैसे लो।" फिर सौ का नोट उस लड़की की तरफ बढ़ा दिया। लड़की हाथ के इशारे से मना करते हुए वहाँ से हट गई। और अपने बाकी बचे तरबूजों के पास जाकर खड़ी हो गई।

विनोद भी गाड़ी से निकल कर वहाँ आ गया था। आते ही बोला "पैसे ले लो बेटा वरना तुम्हारा बहुत बड़ा नुकसान हो जाएगा।" लड़की बोली "माँ कहती है जब बात सम्बन्धों की हो तो हानि लाभ नहीं देखा जाता। आपने गोलू को मेरा भाई बताया मुझे बहुत अच्छा लगा। मेरा भी एक छोटा सा भाई था मगर..."

विनोद बोला "क्या हुआ तुम्हारे भाई को?"

वह बोली "जब वह दो साल का था तब उसे रात में बुखार हुआ था। सुबह माँ हॉस्पिटल में ले जा पाती उससे पहले ही उसने दम तोड़ दिया था। मुझे मेरे भाई की बहुत याद आती है। उससे एक साल पहले पापा भी ऐसे ही हमें छोड़ कर गुजर गए थे।

विनोद की पत्नी बोली "ले बिट्या अपने पैसे ले लो।" लड़की बोली "पैसे नहीं लूँगी आंटी।"

विनोद की पत्नी गाड़ी में गई फिर अपने बैग से एक पाजेब की जोड़ी निकाली। जो उसने अपनी आठ वर्षीय बेटी के लिए आज ही तीन हजार में खरीदी थी। लड़की को देते हुए बोली। तुमने गोलू को भाई माना तो मैं तुम्हारी माँ जैसी हुई ना। अब तू ये लेने से मना नहीं कर सकती।

लड़की ने हाथ नहीं बढ़ाया तो उसने जबरदस्ती लड़की की गोद में पाजेब रखते हुए कहा "रख ले। जब भी पहनेगी तुझे हम सब की याद आयेगी। "इतना कहकर वह वापस गाड़ी में जाकर बैठ गई।

फिर विनोद ने गाड़ी स्टार्ट की और लड़की को बाय बोलते हुए वे चल पड़े। विनोद गाड़ी चलाते हुए सोच रहा था कि भावुकता भी क्या चीज है। कुछ देर पहले उसकी पत्नी दस बीस रुपये बचाने के लिए हथकण्डे अपना रही थी। कुछ देर में ही इतनी बदल गई जो तीन हजार की पाजेब दे आई।

फिर अचानक विनोद को लड़की की एक बात याद आई "सम्बन्धों में हानि-लाभ नहीं देखा जाता।"

विनोद का प्रॉपर्टी के विवाद को लेकर अपने ही बड़े भाई से कोर्ट में मुकदमा चल रहा था।

उसने तुरंत अपने बड़े भाई को फोन मिलाया। फोन उठाते ही बोला "भैया मैं विनोद बोल रहा हूँ।"

भाई बोला "फोन क्यों किया? " विनोद बोला "भैया आप वो मेन मार्केट वाली दुकान ले लो। मेरे लिए मंडी वाली छोड़ दो। और वो बड़े वाला प्लॉट भी आप ले लो। मैं छोटे वाला ले लूँगा। मैं कल ही मुकदमा वापस ले रहा हूँ।" सामने से काफी देर तक आवाज नहीं आई।

फिर उसके बड़े भाई ने कहा "इससे तो तुम्हे बहुत नुकसान हो जाएगा छोटे? " "विनोद बोला" भैया आज मुझे समझ में आ गया है सम्बन्धों में हानि लाभ नहीं देखा जाता। एक दूसरे की खुशी देखी जाती है। उधर से फिर खामोशी छा गई। फिर विनोद को बड़े भाई की रोने की आवाज सुनाई दी।

विनोद बोला "रो रहे हो क्या भैया?" बड़ा भाई बोला "इतने प्यार से पहले बात करता तो सब कुछ मैं तुझे दे देता रे। अब घर आ जा। दोनों प्रेम से बैठ कर बंटवारा करेंगे। इतनी बड़ी कड़वाहट कुछ मीठे बोल बोलते ही न जाने कहाँ चली गई थी। कल जो एक एक इंच जमीन के लिए लड़ रहे थे वे आज भाई को सब कुछ देने के लिए तैयार हो गए थे।

साभार



हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है: मैथिलीशरण गुप्त

जयंती

बालकवि बैरागी
(10 फरवरी, 1931 – 13 मई, 2018)



हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार, जाने-माने कवि, लेखक एवं सांसद बालकवि बैरागी जी का जन्म 10 फरवरी 1931 को मंदसौर जिले की मनासा तहसील के रामपुर गांव में हुआ था। बालकवि बैरागी जन्म से ही बड़े सहज और सरल स्वभाव के थे। इनका बचपन का नाम नंदराम दास बैरागी था। बाद में उन्हें बालकवि बैरागी का नाम दिया गया।

इनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके गांव में हुई परंतु एक साधनहीन परिवार में जन्म लेने के बावजूद इन्होंने विक्रम विश्वविद्यालय से हिंदी विषय में एम. ए. की डिग्री प्राप्त की। साहित्य जगत में इनकी पहचान बनती गई और इन्होंने कविताओं का लेखन आरंभ कर दिया। यह अपनी रचनाओं का लेखन मालवी भाषा में करते थे। वर्तमान में देश के विश्वविद्यालयों में बालकवि बैरागी के नाम पर पीएचडी का शोध कार्य भी किया जा रहा है जो कि बहुत ही सम्मान की बात है।

इन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत 1945 में कांग्रेस पार्टी से की। अपने राजनीतिक जीवन काल में यह लंबे समय तक लोकसभा के सदस्य तथा राज्यसभा के सदस्य भी रहे। बालकवि बैरागी जी ने हिंदी के प्रयोग प्रसार को बढ़ाने में भी अपना सराहनीय योगदान दिया। यह संसदीय राजभाषा समिति के सदस्य भी रहे। बालकवि बैरागी जी की सबसे बड़ी सार्थक पहचान एक कवि और गीतकार के रूप में है। 70-80 के दशक में यह तकरीबन 25 फिल्मों के गीतकार रहे। आजादी के बाद के दौर में हिंदी साहित्य की गरिमा और जनप्रियता को बनाए रखने में उनकी अहम भूमिका थी।

एक संवेदनशील कवि के तौर पर 'अपनी गंध नहीं बेचूँगा', 'गन्ने मेरे भाई', और 'दीवट पर दीप' जैसी कविताओं में उनका लोक जीवन और प्रकृति से गहरा प्रेम झलकता है। हिंदी के महान कवि और लेखक बालकवि बैरागी जी 13 मई, 1918 को मानसा में अपने निवास स्थान पर पंचतत्व में विलीन हो गए। ऐसे दिग्गज कवि एवं महान लेखक को हमारा शत-शत नमन। उनकी एक कविता के कुछ अंश प्रस्तुत हैं:

हैं करोड़ों सूर्य

हैं करोड़ों सूर्य लेकिन सूर्य हैं बस नाम के
जो न दें हमको उजाला वे भला किस काम के?
जो रात भर लड़ता रहे उस दीप को दीजे दुआ
सूर्य से वह श्रेष्ठ है तुच्छ है तो क्या हुआ?
वक्त आने पर मिला ले हाथ जो अँधियारे से
सम्बन्ध उनका कुछ नहीं है सूर्य के परिवार से॥

देखता हूँ दीप को और खुद में झाँकता हूँ मैं
फूट पड़ता है पसीना और बेहद काँपता हूँ मैं
एक तो जलते रहो और फिर अविचल रहो
क्या विकट संग्राम है, युद्धरत प्रतिपल रहो
हाय! मैं भी दीप होता, जूझता अँधियार से
धन्य कर देता धरा को ज्योति के उपहार से!!

पुष्पिंद्र कौर
पूर्व उपनिदेशक (रेलवे बोर्ड)



है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी।
हिंदी हमारी राजभाषा और लिपि है नागरी:
मैथिलीशरण गुप्त

युवा पीढ़ी द्वारा लिया जा रहा तनावः इसे कैसे समझें और नियंत्रित करें

आज की युवा पीढ़ी एक ऐसे दौर से गुजर रही है, जहाँ प्रतिस्पर्धा, अपेक्षाएं, सामाजिक दबाव और तकनीकी जीवनशैली ने उनके जीवन को जटिल बना दिया है। पढ़ाई, करियर, रिश्ते, सोशल मीडिया और आत्म-पहचान की खोज – इन सबके बीच युवाओं पर मानसिक तनाव का भार लगातार बढ़ रहा है। यह जरूरी हो गया है कि हम इस तनाव को केवल समझें ही नहीं, बल्कि इसे सकारात्मक रूप से नियंत्रित करने के तरीके भी अपनाएं।

वर्तमान समय में ऑफिस का कार्यक्षेत्र केवल कामकाज तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह युवा कर्मचारियों के मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित करने वाला स्थान बन चुका है। जब युवा स्नातक होकर कॉर्पोरेट जीवन में कदम रखते हैं, तो वे कई प्रकार के तनावों से जूझने लगते हैं – कार्य प्रदर्शन का दबाव, टीम में तालमेल, करियर की अनिश्चितता, और व्यक्तिगत जीवन के साथ संतुलन बनाए रखने की चुनौती। ऐसे में यह बेहद आवश्यक हो जाता है कि हम इन तनावों को न केवल समझें, बल्कि उनके प्रभावी समाधान भी तलाशें।

तनाव के प्रमुख कारणः

1. **शैक्षणिक दबावः** उच्च अंक लाने और प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में सफल होने की दौड़।
2. **करियर को लेकर अनिश्चितताः** नौकरी की असुरक्षा और भविष्य को लेकर भ्रम।
3. **सामाजिक तुलनाः** सोशल मीडिया पर दूसरों की उपलब्धियों को देखकर खुद को कमतर समझना।
4. **पारिवारिक अपेक्षाएंः** माता-पिता की उम्मीदों पर खरा उतरने की चिंता।
5. **रिश्तों में अस्थिरताः** दोस्ती, प्रेम और सामाजिक संबंधों में असंतुलन।
6. **उच्च प्रदर्शन की अपेक्षाएंः** प्रोजेक्ट डेलाइन्स, टार्गेट्स और KPI (Key Performance Indicators) के चलते लगातार बेहतर प्रदर्शन का दबाव।
7. **कार्य-जीवन संतुलन की कमीः** ऑफिस के काम के साथ निजी जीवन को समय देना अक्सर कठिन हो जाता है, जिससे मानसिक थकावट होती है।

8. रोजगार की अस्थिरता: कॉर्पोरेट दुनिया में परिवर्तनशील माहौल और छंटनी जैसी स्थितियाँ तनाव बढ़ाती हैं।
9. टीम और मैनेजमेंट से तालमेल: टीमवर्क में मतभेद या प्रबंधन की ओर से पर्यास समर्थन न मिलना तनाव का कारण बनता है।
10. खुद की तुलना दूसरों से करना: सहकर्मियों की प्रगति और उपलब्धियों की तुलना खुद से करने पर आत्म-संदेह और चिंता बढ़ सकती है।

तनाव को नियंत्रित करने के उपाय:

1. खुद को समझें और स्वीकार करें

आत्मबोध सबसे पहला कदम है। हर व्यक्ति की क्षमता और परिस्थितियाँ अलग होती हैं। अपने लक्ष्य और सीमाओं को समझना तनाव को काफी हद तक कम कर सकता है।

2. सकारात्मक सोच विकसित करें

विफलताओं को सीखने का अवसर मानें। जीवन में हर मोड़ सफलता की गारंटी नहीं देता, लेकिन हर अनुभव कुछ सिखाता जरूर है।

3. समय प्रबंधन करें

कार्यों को प्राथमिकता देना और समय का सही उपयोग करना तनाव को कम करता है। पढ़ाई, आराम, मनोरंजन और सामाजिक समय – सभी के लिए संतुलन जरूरी है।

4. योग, ध्यान और व्यायाम

शारीरिक गतिविधियाँ और ध्यान तकनीकें जैसे प्राणायाम और मेडिटेशन मानसिक शांति लाते हैं और तनाव घटाते हैं।

5. अपने मन की बात करें

तनाव को मन में दबाए रखना उसे और बढ़ाता है। दोस्तों, परिवार या काउंसलर से खुलकर बात करना बहुत फायदेमंद होता है।

6. सोशल मीडिया से सीमित जुड़ाव

सोशल मीडिया पर समय बिताने से सकारात्मकता कम हो सकती है। इसे संतुलित रूप से उपयोग करना चाहिए।

7. प्राथमिकता आधारित कार्य प्रबंधन

टू-डू लिस्ट, टाइम ब्लॉकिंग, और ईमेल मैनेजमेंट जैसे टूल्स के ज़रिए कार्य को व्यवस्थित करना चाहिए।

8. स्पष्ट संवाद बनाए रखें

अपने मैनेजर या टीम से अपेक्षाओं और सीमाओं पर खुलकर बातचीत करें। गलतफहमियों से तनाव बढ़ता है।

निष्कर्ष:

तनाव जीवन का हिस्सा है, लेकिन उसे समझदारी और आत्म-संवेदनशीलता के साथ संभालना ही जीवन की कला है। युवा पीड़ी को चाहिए कि वे स्वयं को आत्म-संवेदनशील बनाएं, खुलकर संवाद करें और मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें। यदि समाज, परिवार और शैक्षणिक संस्थान भी इस दिशा में सहयोग करें, तो युवा अपने तनाव को न केवल सहन कर सकते हैं, बल्कि उसे सकारात्मक ऊर्जा में बदल सकते हैं।

ऑफिस में तनाव होना असामान्य नहीं है, लेकिन उसे नजरअंदाज करना खतरनाक हो सकता है। युवा कर्मचारियों को चाहिए कि वे अपने मानसिक स्वास्थ्य को उतनी ही प्राथमिकता दें, जितनी कि वे अपने करियर को देते हैं। साथ ही, संस्थानों की भी जिम्मेदारी है कि वे एक सहयोगात्मक, समझदार और संवेदनशील कार्य वातावरण बनाएं जहाँ युवा कर्मचारी न केवल उत्पादक हों, बल्कि संतुलित और खुशहाल भी रहें।

प्रीति रानी
सहायक (प्रशासन)

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है:

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

मनाली – प्रकृति की गोद में बसा स्वर्ग

प्रस्तावना

हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में बसा मनाली एक ऐसा पर्वतीय स्थल है, जहाँ की वादियाँ, बहती नदियाँ, वर्फ से ढके पहाड़ और देवदार के वृक्ष मिलकर एक स्वर्गिक अनुभव देते हैं। हर यात्री की सूची में मनाली का नाम होता है — कभी परिवार संग छुट्टियों के लिए, तो कभी खुद के साथ समय बिताने या रोमांच की तलाश में।

यात्रा की शुरुआत

मेरी यात्रा दिल्ली से शुरू हुई। रातभर की बोल्बो बस यात्रा के बाद सुबह जब मैंने कुल्लू घाटी में प्रवेश किया, तो मानो किसी अलग ही संसार में आ गया। ब्यास नदी के किनारे-किनारे धूमता हुआ रास्ता, कोहरे में लिपटे पहाड़, और बीच-बीच में दिखाई देतीं हिमाच्छादित चोटियाँ मन को शांति से भर रही थीं।

मनाली पहुँचते ही पहला एहसास

मनाली पहुँचते ही जो ठंडी हवा चेहरा छूती है, वो यात्रा की सारी थकान पलभर में मिटा देती है। होटल में चाय की चुस्की लेते हुए बाहर झांकने पर जो दृश्य दिखता है — देवदार के पेड़ों से ढका पहाड़ी ढलान, पीछे वर्फ की सफेद चादर — वो किसी चित्रकार की कल्पना से कम नहीं लगता।

दर्शनीय स्थल

1. हिडिम्बा देवी मंदिर

देवदार के जंगल में छिपा यह मंदिर पांडवों की पत्नी हिडिम्बा को समर्पित है। लकड़ी से बना इसका स्थापत्यशिल्प बेमिसाल है। यहाँ आकर एक आध्यात्मिक शांति का अनुभव होता है।

2. मनु मंदिर

यह मंदिर ऋषि मनु को समर्पित है, जो भारतीय पुराणों में मानव जाति के आदिपुरुष माने जाते हैं। मंदिर एक शांत स्थान में स्थित है, और यहाँ से घाटी का सुंदर दृश्य दिखाई देता है।

3. वशिष्ठ गाँव और गर्म जल कुंड

मनाली से कुछ ही दूरी पर स्थित वशिष्ठ गाँव अपने गरम पानी के प्राकृतिक झरनों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ का जल नहाने पर स्फूर्तिदायक लगता है और कहा जाता है कि इसके औषधीय गुण भी हैं।

4. सोलांग घाटी

यह स्थान रोमांच प्रेमियों के लिए किसी जन्मत से कम नहीं है। गर्मियों में पैराग्लाइंडिंग, ज़िपलाइन, राफिंटंग और सर्दियों में स्कीइंग यहाँ के प्रमुख आकर्षण हैं।

5. रोहतांग दर्द

मनाली से लगभग 50 किमी दूर, यह दर्द लाहौल-स्पीति की ओर जाता है। यह स्थान अक्सर बर्फ से ढका रहता है और यहाँ आकर ऐसा महसूस होता है मानो आप बादलों से ऊपर हों।

6. अटल सुरंग: मनाली की एक अद्भुत इंजीनियरिंग उपलब्धि

अटल सुरंग, जिसे पहले रोहतांग सुरंग के नाम से जाना जाता था, हिमाचल प्रदेश के मनाली के पास स्थित एक 9.02 किलोमीटर लंबी सड़क सुरंग है। यह सुरंग पूर्वी पीर पंजाल पर्वत श्रृंखला के नीचे बनी है और मनाली को लाहौल-स्पीति घाटी के सिस्सू गाँव से जोड़ती है। यह दुनिया की सबसे लंबी हाईवे सुरंग है जो 10,000 फीट (3,048 मीटर) से अधिक ऊँचाई पर स्थित है।

स्थानीय अनुभव

मनाली की मॉल रोड धूमने का एक अलग ही आनंद है। यहाँ तिब्बती हस्तशिल्प, ऊनी शॉल, याक ऊन की टोपी और हिमाचली टोपी मिलती है। खाने के शौकीनों के लिए तिब्बती मोमोज, थुकपा और स्थानीय पकवानों का स्वाद लेना अनिवार्य है। छोटे-छोटे कैफे और बेकरी यहाँ की सांस्कृतिक रचना में जान डालते हैं।

ठहराव और आराम

मनाली में सभी प्रकार की ठहरने की सुविधाएँ मिलती हैं — बैकपैकर के लिए हॉस्टल, परिवारों के लिए रिज़ॉर्ट्स, और शांत अनुभव चाहने वालों के लिए होमस्टें। ओल्ड मनाली में विदेशी पर्यटक और रचनात्मक लोग ज़्यादा मिलते हैं, वहीं न्यू मनाली में सुविधाजनक होटल्स हैं।

यात्रा का उपयुक्त समय

- मार्च से जून — गर्मियों में जब बाकी भारत तप रहा होता है, तब मनाली एक सुखद आश्रय बन जाता है।
- दिसंबर से फरवरी — बर्फबारी का अनुभव करने और स्कीइंग का आनंद लेने का सबसे अच्छा समय।
- जुलाई-अगस्त — बारिश के कारण भूस्खलन की संभावना रहती है, इस समय यात्रा से बचना बेहतर होता है।

समापन

मनाली केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि अनुभवों की एक किताब है — जहाँ हर मोड़ पर कोई नई कहानी है, हर वादी में कोई नया एहसास। प्रकृति, रोमांच, संस्कृति और अध्यात्म — सब कुछ एक ही स्थान पर।

मनाली की यात्रा सिर्फ एक भौगोलिक अनुभव नहीं थी, यह एक आंतरिक यात्रा थी जहाँ हमने खुद से मुलाकात की। वहाँ की ठंडी हवाओं ने हमारी थकान दूर की, पहाड़ों ने हमें विनम्रता सिखाई, और नदियों ने प्रवाह में जीना।

आज भी जब कभी व्यस्तता से घबरा जाता हूँ, आंखें बंद करता हूँ और उस सुबह को याद करता हूँ जब व्यास नदी के किनारे खड़े होकर मैंने खुद से कहा था, "जिंदगी इतनी खूबसूरत भी हो सकती है!"

रोहन श्रीवास्तव
सहायक (हिंदी अनुवादक)

हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे
वैज्ञानिक लिपि है:
राहुल सांकृत्यायन

हिंदी का काम देश का काम है, समूचे
राष्ट्रनिर्माण का प्रश्न है:
बाबूराम सक्सेना

**आईआरएफसी में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन
(दिनांक: 08.03.2025)**



आईआरएफसी द्वारा इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित होली समारोह की
द्वालकियाँ (दिनांक: 13.03.2025)



आईआरएफसी में आयोजित हिंदी कार्यशाला
(दिनांक: 26.03.2025)



आईआरएफसी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

(दिनांक: 26.03.2025)



**वर्ष 2024-25 के लिए कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व
(सीएसआर) पहल के तहत पिंक टॉयलेट परियोजना की झलकियां**



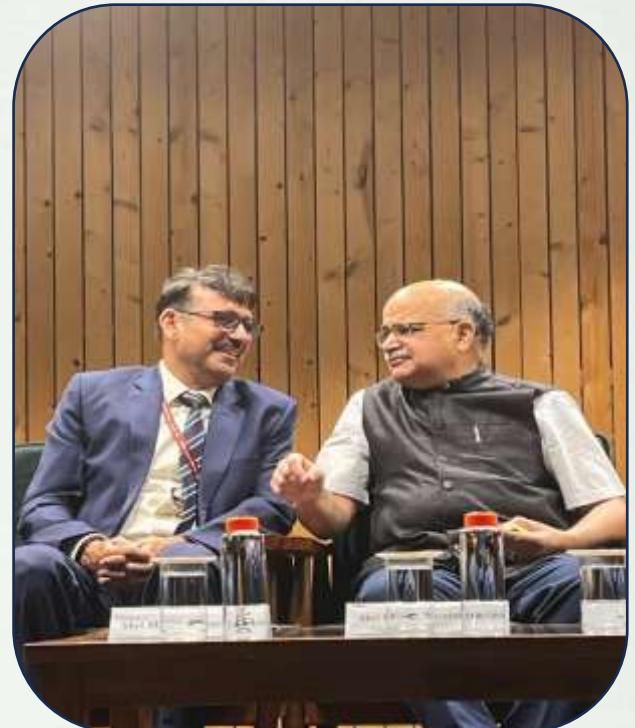
आईआरएफसी के निदेशक मंडल के नामित निदेशक, श्री अभिषेक कुमार पिंक टॉयलेट परियोजना का निरीक्षण करते हुए।



पिंक टॉयलेट परियोजना की झलकियाँ



आईआरएफसी की सीएसआर पहल के तहत आईआरएफसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार द्वारे की
उपस्थिति में नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री बी.वी.आर. सुब्रमण्यन द्वारा सार्वजनिक नीति प्रयोगशाला
के उद्घाटन की झलकियां



Public Policy Lab in Hindu College to promote hands-on learning

The lab is built to reimagine how public policies are taught, studied, and practiced
Debjani Bhattacharya
(Times of India)

Institute of Public Policy Lab at Hindu College, a constituent college of the University of Delhi (UoD), which will be an interdisciplinary hub aimed at bridging the gap between academic theory and real world policy challenges. The Lab is built to reimagine how public policies are taught, studied, and practiced. At universities, theory's stale mould, there is a pressing demand for studies emphasizing its practicality in public policy and the Lab aims to identify and address the significant gaps in practical policy education among practitioners.

Inaugurating the Lab, Prof Arun Bhattacharya,



Course design

The certificate course is a 15-month course, and includes two academic modules of 13-14 weeks each, interspersed by a compulsory week-long internship with a world policy organization. The aim is to cultivate future policy practitioners who can drive meaningful change at the grassroots level.

The Lab is envisioned

as a dynamic hub for policy research, applied re-

search, and placements in eight. It will support students, scholars, researchers, and partnerships with institutions and policy centers, giving students opportunities to engage meaningfully with real-world policy practitioners, says Prof Bhattacharya.

The programme is designed to be innovative and interdisciplinary, reflecting a wide variety of fields such as research, placement, and internships. The programme is open to UG and PG students, senior diplomats, and individuals interested in political science literature.

A unique feature of the Public Policy Lab is its open



आईआरएफसी की सीएसआर पहल के तहत आईआरएफसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार द्वारे की उपस्थिति में नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री बी.वी.आर. सुब्रमण्यन द्वारा सार्वजनिक नीति प्रयोगशाला के उद्घाटन की झलकियां



आईआरएफसी द्वारा अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा देने के
लिए एनटीपीसी रिन्यूएबल एनर्जी लिमिटेड के साथ किए गए
5000 करोड़ रुपये के समझौते की झलकियां



आईआरएफसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा अन्य उच्च अधिकारियों के
साथ एनटीपीसी के मुख्य वित्त अधिकारी, श्री पुष्पिंदर त्यागी



आईआरएफसी के इतिहास में अविस्मरणीय

उपलब्धि- खेल उत्सव (Sports Carnival)-2025

खेलकूद का हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह हमारे स्वस्थ शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य और खुशहाल जीवन की कुंजी है। यह हमारी शारीरिक और मानसिक दक्षता और क्षमता को बढ़ाकर हमारे हृदय को मजबूत बनाता है। रक्त परिसंचरण को बढ़ाकर रक्त धमनियों और मांसपेशियों को स्वस्थ बनाता है। मोटापे को कम करता है। हड्डियों को मजबूत बनाकर हमारे ऊर्जा स्तर को बढ़ाता है। यह हमें नई ताजगी, स्फूर्ति और मनोरंजन प्रदान कर जीवन में उत्साह और खुशियों का संचार करता है। खेल के मैदान में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, अनुशासन और टीमवर्क हमारा आत्मविश्वास बढ़ाकर हमें एक अच्छा और सच्चा इंसान बनाती है। खेल हमें अपने रोजमर्रा के जीवन की समस्याओं को हल करने, उचित निर्णय लेने, चुनौतियों का सामना करने और तनाव को दूर करने में सक्षम बनाता है।

खेलों की इसी महत्ता को समझते हुए, आईआरएफसी ने वर्ष 2024-25 के लिए 28 मार्च 2025 को करनैल सिंह स्टेडियम, नई दिल्ली में अपने वार्षिक "आईआरएफसी स्पोर्ट्स उत्सव-2025" का प्रातः 07.30 से शाम 05.00 तक अत्यंत भव्य और शानदार तरीके से आयोजन किया। इस कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जैसे क्रिकेट मैच, दौड़ प्रतियोगिता, कैरम बोर्ड प्रतियोगिता, बैडमिंटन प्रतियोगिता, शतरंज प्रतियोगिता, टेबल टेनिस प्रतियोगिता। इसमें संगठन के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने बड़े उत्साह और जोश से बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उच्च अधिकारियों की प्रतिभागिता से इस समारोह में चार चांद लग गए। प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आए कर्मचारियों को क्रमशः गोल्ड मेडल, सिल्वर मेडल और ब्रॉन्ज मेडल से सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम हम सबके लिए बेहद हृषोल्लास से परिपूर्ण, सुखद और अविस्मरणीय यादगार बन गया।

यह खेल समारोह इस बात का भी द्योतक है कि आईआरएफसी संगठन अपनी व्यावसायिक उपलब्धियों के साथ-साथ अपने कर्मठ कर्मदिल के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को लेकर भी कितना सचेत है। इस बेहद रोचक, मस्ती से भरे और खेल भावना से ओतप्रोत खेल समारोह की कुछ झलकियां इस प्रकार हैं:

आईआरएफसी में वर्ष 2024-25 के लिए 28 मार्च 2025 को करनैल सिंह स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित शानदार और भव्य वार्षिक "आईआरएफसी खेल उत्सव-2025 (Sports Carnival-2025)" की कुछ झलकियाँ



**आईआरएफसी में वर्ष 2024-25 के लिए 28 मार्च 2025 को करनैल सिंह स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित शानदार
और भव्य वार्षिक "आईआरएफसी खेल उत्सव-2025 (Sports Carnival-2025)" की कुछ झलकियाँ**



"आईआरएफसी खेल उत्सव-2025 (Sports Carnival-2025)" में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा क्रिकेट मैच, 100 मीटर की दौड़ प्रतियोगिता, बैडमिंटन प्रतियोगिता, टेबल टैनिस प्रतियोगिता, कैरम बोर्ड प्रतियोगिता तथा शतरंज प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर आए प्रतिभागियों को क्रमशः गोल्ड, सिल्वर एवं ब्रॉन्ज मैडल प्रदान करने संबंधी झलकियां



**राजभाषा विभाग, रेल मंत्रालय द्वारा आईआरएफसी कार्यालय का
निरीक्षण (दिनांक: 31.03.2025)**



लेख

महाकुंभ

कुंभ मेला दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक समारोहों में से एक है। कुंभ मेला पृथ्वी पर लोगों का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण समागम है और इस दौरान लोग पवित्र नदी में स्नान करते हैं या डुबकी लगाते हैं। बता दें कि भारत में चार पवित्र स्थानों पर हर 12 साल में आयोजित होने वाला यह मेला दुनिया के कोने-कोने से लाखों भक्तों और तीर्थयात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। वर्ष 2025 में 13 जनवरी से महाकुंभ मेले की शुरुआत हुई और 26 फरवरी 2025 को समाप्ति हुई। यह मेला सभी भारतीयों के लिए महत्वपूर्ण है।

यह हर 12 साल में भारत के चार स्थानों पर आयोजित किया जाता है जिनमें प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक शामिल हैं। कुंभ मेला को त्योहार के रूप में देखा जाता है और यह दुनिया भर से करोड़ों भक्तों और तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है जो आध्यात्मिकता, संस्कृति और परंपरा का एक जीवंत मिश्रण बनाता है। प्राचीन हिंदू पौराणिक कथाओं में निहित कुंभ मेला भारत की समृद्ध आध्यात्मिक विरासत को दर्शाता है। यह आस्था और सामूहिक विश्वास और भक्ति की स्थायी शक्ति की याद दिलाता है।

कुंभ मेला एक विस्मयकारी और अद्वितीय आध्यात्मिक समागम है। हर 12 साल में चार पवित्र स्थानों – प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में आयोजित होने वाला यह भव्य आयोजन सभी वर्गों के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है जो आस्था, भक्ति और मोक्ष के बादे से एकजुट होते हैं। कुंभ मेले की उत्पत्ति समृद्ध मंथन के प्राचीन हिंदू मिथक से हुई है जहां अमरता का अमृत गलती से छलक गया था, जिससे यह विश्वास बना कि इन पवित्र नदियों में स्नान करने से पापों से मुक्ति मिलती है।

प्रयागराज कुंभ मेला सबसे बड़ा माना जाता है और इसमें करोड़ों लोग गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदी के संगम के किनारे इकट्ठा होते हैं। 2025 में शहर भव्य महाकुंभ का गवाह बना, जहां भक्त 'स्नान' (पवित्र स्नान) के जीवन-परिवर्तनकारी अनुष्ठान में भाग लेने आए। 2025 का महाकुंभ हाल के समय का सबसे महत्वपूर्ण महाकुंभ है, जिसमें करोड़ों लोग और पर्यटक शामिल हुए। सुरक्षा, स्वच्छता और परिवहन के लिए विशेष व्यवस्था की गई, ताकि सभी के लिए एक सहज अनुभव सुनिश्चित हो सके।

अपने धार्मिक महत्व से परे कुंभ मेला भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है। नागा साधुओं के जीवंत जुलूस, मंत्रों का जाप, आध्यात्मिक प्रवचन और पारंपरिक अनुष्ठान श्रद्धा और एकता का माहौल बनाते हैं। यह आयोजन मानवता की शांति, नवीनीकरण और ईश्वर से जुड़ाव की शाश्वत खोज की याद दिलाता है।

2025 में प्रयागराज महाकुंभ न केवल आस्था का प्रदर्शन है बल्कि भारत की प्राचीन परंपराओं का एक वसीयतनामा होगा जो लोगों को आध्यात्मिकता, एकता और भक्ति के उत्सव में एकजुट करेगा। अपने आध्यात्मिक महत्व के अलावा, कुंभ मेले का गहरा सामाजिक प्रभाव भी है जो विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को एक साथ लाता है और एकता की भावना को बढ़ावा देता है। यह भव्य उत्सव भारत की प्राचीन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक बना हुआ है।

कुंभ मेला दुनिया के सबसे प्रसिद्ध और सबसे बड़े धार्मिक समारोहों में से एक है। यह भारत में आस्था, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। दुनिया भर से करोड़ों लोग इस भव्य आयोजन में भाग लेते हैं, जो इसे भक्ति और एकता का एक अनूठा अनुभव बनाता है।

कुंभ मेले का महत्व

कुंभ मेला केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है बल्कि यह एक सांस्कृतिक उत्सव भी है। यह त्योहार लोगों को अपनी आध्यात्मिक जड़ों से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। भक्त, संत और ऋषि अनुष्ठान करने, ध्यान करने और आध्यात्मिक ज्ञान साझा करने के लिए एकत्रित होते हैं। यह आयोजन सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं को पार करते हुए एकता, भक्ति और मानवता के मूल्यों को बढ़ावा देता है।

कुंभ मेले की मुख्य विशेषताएं

- **पवित्र स्थान:** पवित्र नदियों में डुबकी लगाना कुंभ मेले का मुख्य अनुष्ठान है। ऐसा माना जाता है कि इससे आत्मा शुद्ध होती है और आध्यात्मिक आशीर्वाद मिलता है।
- **सांस्कृतिक कार्यक्रम:** पारंपरिक नृत्य, भक्ति गीत और आध्यात्मिक प्रवचन त्योहार के अनुभव को समृद्ध करते हैं।
- **विविधता में एकता:** जाति, पंथ या राष्ट्रीयता के बावजूद सभी क्षेत्रों के लोग मेले में भाग लेते हैं।

2025 प्रयागराज महाकुंभ

2025 प्रयागराज महाकुंभ अब तक का सबसे बड़ा महाकुंभ है। गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के संगम पर आयोजित इस महाकुंभ ने लाखों तीर्थयात्रियों को आकर्षित किया। अधिकारी आगंतुकों के लिए एक सहज और यादगार अनुभव सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा, परिवहन, स्वच्छता और आवास के लिए विशेष व्यवस्था की गई थी। इस महाकुंभ में प्रतिभागियों का मार्गदर्शन करने के लिए डिजिटल मैप, मोबाइल ऐप और रीयल-टाइम अपडेट जैसी उन्नत तकनीकें भी शामिल थीं।

कुंभ मेले का प्रभाव क्या है?

कुंभ मेले का व्यक्तियों और समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देता है, भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देता है और लोगों को एकजुट करता है। आर्थिक रूप से, यह त्योहार रोजगार पैदा करता है और पर्यटन को बढ़ावा देता है। मेला सामाजिक सद्व्यवहार और वैश्विक सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक मंच भी है।

कुंभ मेला सिर्फ़ एक त्योहार नहीं है बल्कि यह आस्था, परंपरा और मानवता का उत्सव है। यह भारत के आध्यात्मिक सार और सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाता है। छात्रों के लिए, कुंभ मेले को समझना विरासत के महत्व और एकता और भक्ति के मूल्यों के बारे में जानने का एक तरीका है।

महत्वता बताएंगी:

1. कुंभ मेला दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक समारोहों में से एक है जिसे लोग मनाते हैं।
2. यह हर 12 साल में चार स्थानों पर आयोजित किया जाता है: प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन।
3. पौराणिक मान्यता के अनुसार, यह त्योहार समुद्र मंथन की पौराणिक घटना पर आधारित है जहां अमृत की बूंदें गिरी थीं।
4. इस त्योहार में लाखों लोग शामिल होते हैं जिनमें संत, तीर्थयात्री और पर्यटक शामिल हैं।
5. नागा साधुओं के भव्य जुलूस और आध्यात्मिक प्रवचन मुख्य आकर्षण हैं।
6. भक्ति संगीत, नृत्य और अनुष्ठान जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम त्योहार के अनुभव को समृद्ध करते हैं।
7. प्रयागराज कुंभ विशेष रूप से प्रसिद्ध है जो गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर आयोजित होता है।
8. 2025 प्रयागराज महाकुंभ 13 जनवरी से 26 फरवरी तक आयोजित किया गया।
9. 2025 प्रयागराज महाकुंभ इतिहास का सबसे बड़ा महाकुंभ सावित हुआ।
10. कुंभ मेला आस्था, एकता और भारत की समृद्ध आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक बन गया है।

देवेंद्र गर्ग
सहायक (प्रशासन)

उठ तू, श्रृंगार कर
 रसोई से परे जाकर, माँग में सिंदूर स्वीकार कर
 हक है तुझे संवरने का, नित नए तू श्रृंगार कर
 उम्र छीन लेती है चेहरे की रौनक
 मत बैठ तू ऐसे हार कर
 नाकाम कर दे तू हर मुश्किल
 उठ जा, चल तू श्रृंगार कर
 तेरी जिम्मेदारियां खत्म होने से रही बैठ, आइने से बातें दो चार कर
 लगती है नजर तो लग जाने दे
 चल पहले तू श्रृंगार कर
 आँखों के काले घेरे को दुत्कार कर
 तू लंबी एक हुंकार भर
 तेरा अस्तित्व तुझे पुकारता है, गर्व से तू श्रृंगार कर
 लोग क्या कहेंगे, सरासर इसे नकार कर
 आसमान है तेरा ठिकाना, मस्त तू श्रृंगार कर
 तेरा लड़ना मायने रखता है, तू बैठ मत हार कर
 लोग देखे तुझे मुँड-मुँड कर
 इस तरह तू श्रृंगार कर

गीता चौहान
 परामर्शदाता (वित्त)

लेख

भारत का दर्शन

पूरे विश्व में भारत एकमात्र ऐसा देश है जहां विभिन्न संस्कृतियां, भाषाएं, धर्म और जातियां हैं। इसके बावजूद “अनेकता में एकता” वाक्यांश भारत की पहचान है। भारत हमेशा अपनी परंपराओं और सौहार्द के लिए जाना जाता है। रिश्तों में स्नेह और विविध संस्कृतियां होते हुए भी मिल-जुलकर रहने की भावना हमारे देश को दुनिया में अलग पहचान दिलाती है।

एक व्यक्ति ने मुझसे सवाल पूछा; यदि भारत का भ्रमण करना हो या भारत का दर्शन करना हो, शहरी और ग्रामीण इलाकों के लोगों के विचारों को जानना हो, तो क्या करना चाहिए?

मैंने एक छोटा और संक्षेप में उत्तर दिया:-

“सबसे बेहतर है आप सुदूर ग्रामीण इलाकों में से एक रेल सेवा ले लो जो, आपको मुम्बई/चेन्नई/कोलकाता/मुंबई महानगर के लिए ले जाती है और सफर का समय कम से कम 18 घंटे हो।”

आप उस ट्रेन में फर्स्ट एसी में टिकट बुक कराएं... जब टीटी महोदय आकर आपकी सीट का मुआयना कर लें, तब आप उस बोगी से उतरकर जनरल बोगी में चढ़कर चार घंटे यात्रा करने की कोशिश करें।

... चार घंटे बाद फिर से आप स्लीपर में यात्रा करें..दो घंटे... इसी तरह फिर थर्ड एसी... सेकेंड एसी....फिर अपनी बोगी में आकर गंतव्य के लिए तैयार हो जाएं, - सो कर जाने के लिए।

आपको एहसास हो जाएगा.... भाषा, रहन-सहन, आय, विचार, ग्रामीण इलाकों के विचार, शहरी क्षेत्रों के लोगों के विचार... कुल जमा मैं यह कह सकता हूं कि आप भारत को जानने लगेंगे सोशल मीडिया से दूर...एक ऐसा भारत जिसकी जरूरत के लिए.. शायद आप देश के लिए कुछ करने में विश्वास वाले लोगों में शामिल होकर... जरूर अपना सहयोग करेंगे।

...उनके चेहरे पर संतोष का भाव था...मेरे चेहरे पर सुकून था... शायद मैं एक और व्यक्ति को समझने में सफल रहा... जो विकसित भारत की परिकल्पना के सहयोग में भागीदार बनेगा।

संक्षेप में मेरा यह मानना है कि भारतीय रेल न केवल परिवहन का एक साधन है अपितु यह भारतीय संस्कृति की संवाहक भी है। इसने विभिन्न संस्कृतियों और धर्म के लोगों को आपस में जोड़ा है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को एक साथ लाई है। रेलवे की यात्रा का अनुभव एक सांस्कृतिक अनुभव होता है। यात्रा के दौरान हम विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृति और धर्मों के लोगों से संवाद करते हैं और अलग-अलग संस्कृतियों, खानपान, रीति-रिवाजों की जानकारी भी अर्जित करते हैं। इसीलिए भारतीय रेल को भारत की जीवन रेखा कहा जाता है। भारतीय संस्कृति को जानने के लिए रेल यात्रा करना एक सुखद अनुभव है।

अवनीश प्रकाश
सहायक (प्रशासन)

लेख

पति का जीवन आसान नहीं होता

एक पति जो पूरे परिवार में अपनी बहन का भाई, माँ का बेटा, अपने बच्चों का पिता और अन्त में एक पत्रि का पति होता है जिसके साथ न जाने कितने और भी रिश्ते जुड़े होते हैं उसे उन सभी रिश्तों को निभाना होता है जो उसके निकट सम्बन्धी हैं।

एक पति का जीवन आसान नहीं होता जब सुबह-सुबह घर से बाहर अपने दफ्तर के लिए जाता है तो वहां अपने बॉस की बहुत सी बातों को सुनना, रास्ते में अनगिनत वाहन और उनसे हुई समस्याओं का सामना करने के बाद शाम को जब घर आकर परिवार में शामिल होता है तो चेहरे पर मुस्कुराहट का भाव लिए रहता है। यही सोचकर कि उसका परिवार उसे देखकर परेशान न हो तभी तो कहा जाता है कि पति का जीवन आसान नहीं होता।

एक पति जो परिवार में सभी का मान, सम्मान, प्यार, विश्वास, समझदारी सभी की जरूरतों का ध्यान रखता है जो सभी की भावनाओं की कद्र करता है। इसके बदले वो क्या चाहता है सिर्फ, यहि ना कि सभी लोग उसे समझें, उसकी समस्याओं को समझने की कोशिश करें, दो समय का खाना समय पर मिलता रहे, पूरे परिवार का सिर्फ प्यार ही तो लेना चाहता है वो।

पति क्या है पत्रि के लिए, पति का नाम सिर्फ भरोसा, तो पत्रि का नाम भी समर्पण ही तो है, जो एक-दूसरे के लिए सब कुछ अर्पण कर देते हैं। परिवार के अन्दर कोई उसे समझे या ना समझे लेकिन एक पत्रि को पूरी तरह से हमेशा उसके साथ खड़े रहना चाहिए। अपनी पत्रि के लिए एक मर्यादा में रहना तथा जाने अन्जानें में की हुई उसकी सभी गलतियों को नजर अन्दाज करके उसके साथ खड़े रहकर रहना ही तो एक सच्चा पुरुष और एक सच्चा साथी कहलाता है।

तभी तो एक पत्रि के लिए भी उसका पति ही सब कुछ होता है। उसके पास होने पर वह सोचती है जैसे पूरी दुनियां का सुख उसे मिल गया हो, कोई रिश्ता उसके पति की कमी को कभी पूरा नहीं कर सकता।

पति ही वो इन्सान है जो अपनी इच्छाओं को दबा कर अपनी पत्रि, बच्चे और परिवार की जरूरतों को पूरा करने की पहली कोशिश करता है। अपनी कमीज में हुए छेद को भी स्वेटर से छिपाकर अपने दफ्तर का समय भी आसानी से बिता देता है। तभी तो कहते हैं कि पति का जीवन आसान नहीं होता।

और अब अन्त में सभी महिलाओं से बस यही कहना चाहूँगी कि कृपया करके सभी, अपने पति का अच्छे से ध्यान रखा करें, इन्हें कोई भी मानसिक परेशानी न होने दें। क्योंकि इनका जीवन अनेक कठिनाइयों से भरा हुआ है, इसलिए ही तो इनका जीवन आसान नहीं होता।

बहुत प्यार करती हूं अपने पति को,
इसलिए सभी से कहती हूं सभी अपने
पति को मन से प्यार करें।

संध्या वर्मा
पत्रि अंशुल वर्मा



हिंदी हमारे देश और भाषा
की प्रभावशाली विरासत है:
माखनलाल चतुर्वेदी

हिंदी में हम लिखें पढ़ें,
हिंदी में ही बोलें:
पं. जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी

अनमोल वचन

1. हर मनुष्य को ये याद रखना चाहिये,
जब तक हम खुद पर विश्वास नहीं करेंगे,
तब तक हम अपना सम्मान नहीं कर सकते।
2. अगर व्यक्ति अपनी पूरी लग्न के साथ कोई भी काम करता है, तब उसे कभी हार का मुँह देखना नहीं पड़ता है।
3. हमें काम के साथ-साथ हमेशा कुछ समय का विराम लेना चाहिए, ताकि खुद के बारे में भी कुछ सोच सकें।
4. सफल व्यक्ति कोई नया काम नहीं करता, बल्कि वो काम को नए तरीके से करता है।
5. अगर जीवन जीना चाहते हो तो दुसरों के लिए जीना सीख जाओ।



इंडियन
रेलवे
फाइनेंस
कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)

भविष्य पथ पर